प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'

एगो छली सिनेह



नेहाक मोन मे एकेटा गप एखन घुरिया रहल छैक। कमलेश आइ गामक मुखिया छथि। सिनेहक देह द्वारा बहरायल ओकर अनाम संतान आइ कतऽ अछि ?एखन जँ हमरा ओ भेटितय तऽ हम कहितिऐ जे अहाँ अपन गाम जाउ आ कहियौ जे मुखिया जी हमर पिता छथि !

-मुदा अहाँक सिनेहक तँ ओ पति नहि छथिन ! नेहा के लगलनि, क्यो कान मे ई बात कहलक।

-हँ। तऽ ऐ मे लाज कथीक, ग्लानि कथीक ! ई समाज तँ बड़ चुमकी सँ श्राद्ध आ बियाह दुनू पुजबैए। नेहा स्वयं के उत्तर देलनि आ आँचर लऽकऽ मुँह पोछऽ लगलीह।

एगो छली सिनेह

एगो छली सिनेह

(कथा संग्रह)

प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'

जखन-तखन

लक्ष्मीसागर, दरभंगा

एगो छली सिनेह
प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'
एल.2/33, पी.आइ.टी. कालोनी
कंकड़बाग, पटना- 800020
दूरभाष- 0612-2351976

प्रकाशक : जखन-तखन, लक्ष्मीसागर, दरभंगा

स्केच : विजय कुमार सिंह

संस्करण : भ्रातृ द्वितीया, 2005

मूल्य : 50 टका (साधारण)
100 टका (असाधारण)

मुद्रक : प्रिंटवेल, टावर, दरभंगा

EGO CHHALI SINEH

by Premlata Mishra 'Prem'

ई पोथी
पूज्यनीयाँ माता
वृन्दा देवीक स्मृतिमे,
जिनका हम 'लाल दीदी'
कहैत छलियनि

—प्रेमलता

स्वागतम्

स्वागत हो, कथा-सरस्वतीक मन्दिरमे अपन बाड़ीक फूलक पहिल माला लए ठाढ़ि श्रीमती प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'क स्वागत हो ! ई उद्गार कोनो स्वागत-भाषण नहि, हमर स्वगत भाषण थिक । ओहि दिन जखन श्रीमती मिश्र अपन पहिल कथा-संग्रह 'एगो छली सिनेह' केर पाण्डुलिपि लेने हमरा ओतए अइलीह आ हमरा पढ़ए देलनि तँ अनायास ई उद्गार बहराएल– मुहसँ नहि, हृदयमे । श्रीमती मिश्र जहिना मैथिलीक रंगमंचकेँ चमकओलनि तहिना कथा जगत्केँ सेहो, अवसर पाबि, चमकओतीह, इएह आशा छल ओहि उद्गारक प्रेरक ।

कथा पढ़ल । एक-दू टा पहिनहु पढ़ने रही । कथा सभ केहन अछि से आलोचक कहताह । हम तँ केवल पाठक छी । नव आ अल्प-प्रतिष्ठित कथाकार सभक कथा विशेष कए पढ़ैत छी । कारण, हमरा जनैत विकासक सामान्य (यथार्थ) स्थिति बुझबाक हो तँ उपरसँ दस प्रतिशत आ नीचाँसँ बीस प्रतिशतकेँ छाँटि देबाक चाही । किएक तँ उपर बाला धरतीसँ उपरे उड़ैत रहैत छथि आ नीचाँबाला धरतीपर ठाढ़े नहि भए पबैत छथि । धरती पर ठाढ़ रहैत छथि केवल बीचबाला आ तनिके कथा सामान्य स्तरक पाठकेँ विशेष रुचैत छैक । श्रीमती मिश्र धरती पर ठाढ़ि छथि ।

उपर्युक्त त्रितलीमे हिनक पाएर कोन तलपर छनि से आलोचके कहताह । हम तँ एतबे कहब जे कोनो-कोनो नीक लागल आ कोनो-कोनो बेस । विशेष आकृष्ट कएलक एकर चरित्र-चित्रण, सहज-प्रवाह आ सामाजिक यथार्थ-स्थिति ।

आलोचकलोकनिसँ एक टा अनुरोध । आलोचना करबाक समय ई नहि बिसरथि जे श्रीमती मिश्र केहन जीवन-स्थितिमे, साधनक केहन विपन्नता मे आ केहन बहुविध व्यस्ततामे ई कथा सभ लिखने होइतीह । हुनकालोकनिसँ इहो आग्रह जे नवागत आ अल्पप्रतिष्ठित कथाकारलोकनिक कृति अवश्य कए पढ़थि । भए सकैत अछि, ओ जकरा कोइलाक ढेर बुझैत होथि ताहिमे कोनो हीराक कण हो !

पटना

21.10.05

—गोविन्द झा

क्रम

वापसी

ममता तीने वर्षक छल तखने पारिवारिक माहौल एहन भऽ गेलै जे शामू कँ घर छोड़ऽ पड़लैक। की करितैक बहुत दिन धरि पति-पत्नी मे विचार होइत रहलैक। शामूक पति अपने मायक आतंक सँ आतंकित छल। पिता सेहो अपन पत्नीक खुलेआम विरोध करबाक सामर्थ्य नहि रखैत छलाह।

खटपट तँ तहिये शुरू भऽ गेल छलैक जहिया ओ एहि घर मे पैर रखलक। ओकरा देखऽ ओकर ससुर गेल छलथिन। बिनु श्रृंगार-पटारक अपन पिताक आदेश सँ ओ ड्राइंगरूम मे आबि ससुरक पैर छूने छल आ विवाह ठीक भऽ गेल छलैक।

एतेक जल्दी कोनो बहिनक विवाह नहि तय भेल छलैक। सात बहिन मे सभ सँ दब यैह छल। एकर रंग सेहो सभ सँ कम छलैक। तँ ओकर नाम शामू राखल गेल।

विवाहक बाद जहिया सँ ओ एहि घरमे आयल तहिये सँ सासुक व्यवहार देखि क्षुब्ध रहैत छल। जखन कखनो पति-पत्नी घर सँ बहराइ सासु पाछाँ सँ टोकि दैत छलथिन-

बौआ! दिन मे नहि बहरायल करऽ, भरि मोहल्लाक लोक हमर कुचेष्टा करैत अछि। राहुलक माय काल्हियो टोकने छलीह-यै आशुक माय, कतऽ अहाँक बेटा आ कतऽ पुतहु। की देखि उठा अनलहुँ ! कोना देखि कऽ माछी गिरल गेल !

मुदा हिनका लेल धैन सन। मायक बातपर खूब ठहाका लगाकऽ हँसैत छलाह। उपर सँ माय कँ खौंझाबय लेल गीत गाबऽ लगैत छलाह- मोहे श्याम रंग दै दे, मोरा गोरा रंग लेइ

ले। पतिक चौल करबाक आदति सँ शामू आजीज भऽ जाइत छलि मुदा की कयल जाय। ओ एखनो धरि ओहने स्वभावक छथिन। आ आब तँ केओ हुनका बात पर ध्याने ने दैत अछि।

सासु सदिखन ओकर एकटा-एकटा काज पर ध्यान दैत रहैत छलथिन आ कनेको त्रुटि भेलापर हुनका भरि दिनुक खोराक भेटि जाइत छलनि। एतबो दिन धरि घरमे बनल रहबाक कारण छल ओकर चुप्पी ओ पतिक प्रेम ।

थोड़बे दिनक बाद ओकर देओर राघो अपनहि जातिक मात्र मैट्रिक पास लड़की कँ पसिन्न कऽ लेलक। लड़कीक बाप एकरा परिवारक योग्य नहि छलैक। लड़कीक सुन्दरता देखि सासु मानि गेल छलथिन। लड़कीक पिता मात्र एक खण्ड साड़ी मे अपन बेटी कँ विदा कयलक। आइ-माइ सभ जखन कनियाँक पेटार देखयबाक आग्रह कयलथिन तखन कतेक काल धरि शामू चाभी नहि भेटबाक बहन्ना करैत रहलि। कतेक कालक बाद जखन घर सुन्न भेल तखन किछु अपना बाकस सँ आ किछु नोत-पिहानी मे आयल कपड़ा-लत्ता सँ बाकस भरि देलक। जखन नवकनियाँक बाकस देखाओल जाय लगल तँ ओकर ननियाँ सासु कँ नहि रहि भेलनि। ओ बाजि उठलीह- 'हे दाइ सभ, एहि साँठ-उसार मे किछु बड़की कनियाँक हाथक सफाइ बुझि पड़ैत अछि। राघोक ससुर एतेक देबऽ बला नहि छथि।' ताहि पर सभ भभाकऽ हँसऽ लागल छल। मुदा तखन ओकर सासु कँ ओकर एहि व्यवहार पर प्रसन्नता भेल छलनि। देओर कँ बैंक मे नोकरी छलनि आ सुन्दर कनियाँ भेटल छलनि । मुदा कनियाँक व्यवहार कोनो ढंगगर नहि छलनि आ से सासुओ कँ किछुये दिन मे बुझा गेलनि। राघो बैंकक लोनसँ जमीन कीनि लेलक आ अपन मकान बना अपना घरमे जयबाक तैयारी करऽ लागल। ससुर गया मे नौकरी करैत छलथिन तँ ओ गये मे रहैत छलथिन। यदा-कदा छुट्टी मे पटना अबैत छलाह। तेँ विचार भेल जे मकान किराया पर लागि जयबाक चाही। छोटका बेटा अपन मकानमे चलि जयताह तँ बड़को बेटा मकान खाली करथु, तखने सौंसे मकान किराया लागत आ किराया पूरा आओत ।

सासु बात-बात पर कहऽ लगलथिन- हौ बाबू सभ, हमर घर खाली करैत जाह। हमरा किराया आओत आ हम पैसा सँ अपना लेल सभटा सुख बेसाहि लेब। हमरा कोनो बेटा-पुतहु सँ काज नहि अछि। भोगि लेलहुँ सभक सुख, आब आर नहि! छोटका बेटा तँ अपन घरमे जयबाक मन बनाइये लेने छल मुदा सासुक व्यवहार सँ शामू कँ सेहो घर छोड़ब आवश्यक भऽ गेल ।

अन्ततः पतिक कॉलेज, जतऽ सँ लग छलैक तेम्हरे किरायाक मकान ताकि एक दिन शामू सेहो अपन छोट सन गृहस्थी लऽ अपना सासु-ससुर सँ फराक अपन गृहस्थी बसाबऽ विदा भऽ गेल। एम्हर शामू कँ एकटा स्कूलमे छोटसन नोकरी लागि गेल छलैक। मुदा छोट बच्चा घरमे एसगर कोना रहत। नैहरक डेरा दूर छलैक तँ विचार भेलैक जे

किएक ने एकटा दाइ राखि लेल जाय। जँ भरोसक लोक भेटि जाय तँ ओकरे पर घर आ बच्चा दुनू छोड़ल जा सकैत अछि ।

संयोग नीक जे शामूक सबसँ जेठ बहिन एकटा नीक दाइक व्यवस्था धरा देलकै आ जेना-तेना ओकर गृहस्थीक गाड़ी ससरऽ लागल छलैक ।

सासु-ससुर अपन सौंसे मकान किराया पर लगा, गयाकेँ अपन स्थायी निवास बना लेलथिन। दिन बीतैत देरी नहि लगैत छैक। ससुर रिटायर भऽ बीमारीक अवस्था मे अस्पताल मे भर्ती भऽ गेलथिन। शामूक बेटी ममता सिन्दरीक इंजीनियरिंग कॉलेज मे पढ़ि रहल छैक। बेटा दसमा पास कऽ कम्पीटिशनक तैयारी मे लागल छैक ।

सासुक शरीर आब काज नहि कऽ रहल छनि मुदा रहन-सहनमे वैह मेमसाहेबी। भोरे उठि चाहक गिलासक बगल मे एक गिलास जूस राखल रहबाक चाही। घड़ी देखि भोजन टेबुल पर आबि जयबाक चाही। ई सभटा ठाठ हुनकर चलैत छलनि एकटा रमुआ नोकर आ पतिक बलपर। जे पति अपन पत्नीक सभटा अत्याचार खुशी-खुशी वहन करैत छलथिन, से आब ओ अपने विवश भऽ गेल छथिन। गया छोड़ि पटना मे शामूक आवास पर रहि किरायेदार सँ अपन मकान खाली करयबाक प्रयास मे लागल छथि ।

शरीरक हालति तेहन जर्जर भऽ गेल छनि जे सदिखन डाक्टरी सलाहक हेतु पटना-गया अप-डाउन करब हुनका लेल संभव नहि छनि। शामू अपन स्कूल सँ छुट्टी लऽ सासु-ससुरक सेवा मे दिन-राति एक कऽ देलक। ओकरा लोकनिक सेवाक बलेँ ससुर आब आँशिक रूपें ठीक भऽ गेल छथिन। परिस्थितिवश पत्नीक तेवर आब नहुंए नहुंए कम भेल जा रहल छनि। शामूक प्रशंसा करैत मुँह नहि थकैत छनि ।

एक दिन शामूक ससुरक मकान किरायेदार खाली कऽ देलक। मकानक मरम्मति जल्दी-जल्दी भेल। घर जेना-तेना सजाओल गेल आ बुढ़ा-बूढ़ी अपन मकान मे रहय लगलाह। मुदा भम पड़ल मकान बिनु बाल-बच्चाकेँ काटय लगलनि। छोटका बेटा राघो कें ने फुर्सति छलैक आ ने पैसे जे सेवा करतनि। छोटकी पुतहु राघोक कनियाँ जतबे सुन्नरि ततबे सुकुमारि। तेँ ससुर केँ अस्पतालो मे मात्र एकदिन कोनहुना देखबा लेल जा सकलथिन। सासु-ससुर केँ मकान एकसर मे काटय लगलनि। तेँ ससुर आब ओही बड़का बेटा आ शामू सन पुतहुकेँ किरायाक मकान छोड़ि अपन मकान मे अयबाक आग्रह बेर-बेर करय लगलथिन। ओना जहिये सँ सासु-ससुर पटनाक अपन मकान मे अयलथिन, सभ छुट्टीक दिन भोर सँ साँझ धरि शामू हुनका लोकनिक तबेदारी मे बितबैत छलि। मुदा ताहि सँ काज नहि फरिआ रहल छलनि। ओही बीच शामू एकटा गाड़ी लऽ लेने छलि। शामूक ससुर पहिने सँ एकटा एम्बेसेडर रखने छलथिन जे हुनके जकाँ बूढ़ आ लाचार भऽ गेल छल। मुदा जहिना कोनो बुढ़बा अपना केँ बूढ़ मानय लेल हठात् तैयार नहि होइत अछि तहिना अपन गाड़ियो केँ ओ रँगि-ढँगि कऽ तैयार कयने रहैत छलाह। शामू ओहि गाड़ीक

नाम रामप्यारी रखने अछि। ओ कहैत अछि जें जँ बाबूजी अपन गाड़ी बेचहु चाहताह तँ ओ लोहाक भावमे मात्र कबाड़ी कीनि सकैत अछि। मुदा ई बात मुँह पर ओहि बूढ़ा कँ के कहतनि ।

मकान मे मात्र एकटा गैरेज अछि तँ शामूक ससुर जेना-तेना दोसर गैरेज बनबाबऽ मे दिन-राति मिस्त्री-मजदूर संग अपस्याँत रहैत छथि। आब लगैत छैक जे शामू कँ जे ओहि सासु-ससुरक घरमे पुनः जल्दी आपस जाये पड़तैक। ओना बेटा बासू आ बेटी ममता कँ दादा-दादी सँ बड़ स्नेह छैक । ओ लोकनि पोता-पोती कँ मानितो बड़ छथिन। ममता तँ एखन सिन्दरी मे छैक अपन पढ़ाइ मे लागल आ बासु दिल्ली मे चारि मास सँ रहि रहल छैक। तँ शामू अपन पति आ प्रिन्स (कुकुर)क संग नवका मारुति भान सँ वापसीक तैयारी मे जुटि गेल अछि। दुनू पति-पत्नी संग ओकर सभ शुभचिन्तक ओकर वापसी पर शुभ कहि हाथ हिला रहल छैक। सभक संग हमहूँ भगवती सँ प्रार्थना करैत छी जे शामूक ई वापसी सुखद होइक ।

❋

अभागल

पुलक नीचाँ ततेक जाम छलैक जे रिक्शा बला गुमटी सँ एक बाँस पहिने रिक्शा सँ उतारि देलक। रौदो आइ तेहने तिक्ख छल। दस डेग चलल होयब कि लागल जेना सौंसे मुँह झड़कि गेल। घामे-पसेने तऽर भऽ गेलहुँ। कहुना डेग ससारैत काली मंदिर तक पहुँचले होयब कि पूब दिस सँ हनहनाइत ट्रेन आबि बीचे मे अँटकि गेल। ई तऽ लगैत अछि जेना सब दिनक खिस्सा भऽ गेल । लाइन पार करब असम्भव। पूब देखू तऽ ततबे दूर आ पश्चिम देखू तऽ ततबे दूर। पूल पर चढ़ब आ ओहि पर सँ पार करब एहि गर्मी मे आर असम्भव ।

साहसी लोक सब गाड़ीक डिब्बो सँ ओहि पार जा रहल छल तऽ कतेक लोक गाड़ीक तऽर सँ सेहो पार कऽ रहल छल। मुदा हम हीया हारि ओहि काली मंदिरक दुआरि पर बैसि काली जी केँ गोहराबऽ लगलहुँ जे हे काली माता, जल्दी एहि ट्रेन केँ बिदा करू ।

ताबत मे केओ भरि पाँज पकड़ि कहलक- दाइ अहाँ एम्हरे दिस रहैत छिऐक । मन तऽ भूखे-पियासे आँट छल ताहि मे कोनो परिचित सँ भेंट भऽ जायत से सोचनहु ने छलहुँ। कोनहुना ओकर पाँज सँ मुक्त होइत ओकर मुँह निहारलहुँ । लागल जे ई आबाज आ चुहलपनी कतहु सँ चिर-परिचित अछि। फेर किछु क्षणक बाद अचानक फरिछा गेल- अरे ! ई तऽ बसौलीबाली, मोतियाक काकी अछि !

आब दुनू गोटा अपन हँसी नहि रोकि सकलहुँ आ कनेक काल खूब हँसि लेलाक बाद कुशल-समाचार पुछऽ लगलहुँ। फेर ओ उलहन देबऽ लागल-यै दाइ, अहाँ हमरा

चिन्हलहुँ किएक नहि ? जेना सभ मे किछु दिनक बाद परिवर्तन भऽ जाइत छैक तहिना बसौलीबाली सेहो बेस बदलि गेल छल। दस वर्ष तऽ देखना भइये गेल होएत । सेहो दस वर्ष पहिने जे भेँट भेल से काजेक घर छलैक। ओ अपने हुलिमालि मे लागल छल। भरि दलान-आँगन पाहुन-परक सँ भरल छलैक। मोतिया छौंड़ा पीयर धोती पहिरने आँखि मे काजर कयने वियाह करबा लेल जयबाक हेतु तैयार छल। भरि टोल हकार देने छल। ओहि समय कोना ने कोना हमरो सखी-बहिनपा सभहक जुटान भऽ गेल छल, तैं देखबाक अवसर भेटि गेल छल। हम टोकनहुं छलिऐक- ऐ बसौलीबाली, की एतनीटा छौंड़ा के वियाह करबै छिऐक ! ताहि पर बसौलीबाली कहने छल- ऐ दाई अहाँ सभ टाउन मे रहैत छी, तैं ने एना बजै छी। एकरा तुरिया के टोल मे केयो नहि कुमार छैक। ई बैसाख चौदह पुड़ि, पन्द्रहम चढ़ि गेलै छौंड़ा के। चारि वर्ष कनियाँ नैहर रहतै, पँचमे गओना हेतैक ताबत तऽ छौंड़ा फुटि कऽ जुआन भऽ जेतै ।

बड़ मनोरथ सँ वियाह कयने छलैक बसौलीबाली मोतिया के। सौंसे टोलबैया के दू साँझ भोज खुयलकै। भरोस ने छलैक जे ई टुअर मोतिया एहि जोगरक हेतै आ हम दुनू बेकती ई दिन देखब। मोतिया पेटे मे छलैक तऽ बाप मरि गेलै । ओहो दिन ओहिना मोन अछि जे सौंसे टोलबैयाक घर मे ओहि दिन चुल्हि नहि पजरलैक । की भेल केओ बुझबो नहि केलकै आ मोतियाक बाप चट्ट दऽ बिदा भऽ गेलै ।

छौंड़ा अढ़ाइ वर्षक भेलै तऽ एही भादो मास मे मोतियामाय केँ कतऽ सँ सांप काटि लेलकै आ ओहो कोन बाटे बिदा भऽ गेल से ओकर जेठकी दिआदनी बसौली बाली केँ पतो नहि चललै ।

बसौलीबालीक कोर मे रहि गेलै अढ़ाइ वर्षक मोतिया आ ओकर दायित्व। बसौलीबाली ओकरा छाती सँ लगा लेलक आ ओकरा पोसबा मे कोनो कसरि नहि रखलक। मोतियाक काका बालेश्वर सेहो ओकरे निहारैत रहैत छल ।

भगबानक एहन लीला जे बसौलीबाली केँ कोनो संतान नहि भेलैक। बालेश्वर के कतेक दोस्त-महिम विचार देलक दोसर वियाह कऽ लेऽ! के जाने ओकरा सँ कोनो सन्तान भऽ जेतऽ तऽ घर भरि जेतऽ। बालेश्वर ककरो बातक मोजर नहि कयलक। सभक बात केँ नकारि देलक। बालेश्वर कहैत छल हमरा वियाह कयने हमर गृहस्थी उजड़ि जायत। बसौलीबाली सन घरनी अछि जे हमर घर डेबने अछि। भुखलो रहैत अछि तऽ कखनहुँ मुँह मलिन नहि करैत अछि। रहल संतानक बात से तऽ छोट भाय-भावहु एकटा टुअर नेना केँ हमरा कोर मे धऽ कऽ चलि गेल, ओकरे दुनू परानी मीलि कऽ पोसब आ ओकरे सँ हमरा दुनूक मनोरथ पूरा होयत । मोतियाक जिनगी बचतै तऽ ओकरे सँ हमर घर भरि जायत ।

से मोतिया आइ पन्द्रह वर्षक भऽ गेल छलैक आ बिबाह करबा लेल जा रहल

छलैक। कोनो दाइ-माइक नजरि ने लगनि तैं ओकरा आँखि मे खूब मोटगर काजर कयल गेल छल। गीतनादक संग दुर्गास्थान मे भगवती कें गोर लागि मोतिया बियाह करबा ले चल गेल छल। बालेश्वरक आँखि तऽ गंगा-जमुना भेल छल। खुशीक नोर छलैक कि सहोदर भाइक विछोह मोन पड़ि आयल छलैक, से के कहय ? सभटा बिसरल बात मोन पड़ि गेल। बसौलीबाली टोकलक- दाइ कतऽ भोतिया गेलिऐ ! ततबहि मे अपन पाछाँ मे ठाढ़ एकटा बेस डील-डॉल बला जबान कें कहलक- रे ! गोर नहि लगलहुन दीदीकें।

मुँह लागल जेना कतहु देखल सन। ओहो देखि कऽ कने लजाकऽ मूड़ी झुका लेलक। बसौलीबाली जोर सँ डपटलक आ आँखि सँ नोरक धारा बहि गेलै । कहऽ लागल दू मास सँ गाम सँ भागल अछि। एही ठाम रिक्शा चलबैत अछि। गाम मे छलै तऽ खेत-पथार, माल-जाल पर कोनो ध्यान नहि। आब पहिलुका गाम नहि छैक दाइ । सभ छौड़ा सभ की कहाँ नीशां करऽ लगलैक अछि। राति मे देरी सँ घर आयत आ खा कऽ चुपचाप सूति जायत। दिनमे दस बजे धरि सुतले रहत । कनियां किछो कहैत छलै तऽ ओकरो धुनि दैत छलैक। बुढ़बा तऽ बुझू दाइ दिन-राति एकरा कारणे पेटकान लधने रहैत छैक। हमरे एक दिन तामस उठल कि आँगन मे बाढ़नि लऽ मारऽ दौड़लहुँ। से जे भागल से कोनो पता-ठेकान नहि देलक। पछबारि टोलक नूनू बौआक कतेक नेहोरा कयलहुँ तऽ ओ अपने संगे हमरा पटना लेने अयलनि आ मोतियाक बासा धरि पहुंचओलनि। अभागल कें एकोरती हमरा सभ पर दया-माया नहि छैक। कनियाँ कें दुलहाबाली काकी पर छोड़ि कऽ आयल छीऐ। अहाँक मुँह देखऽ ले मोन लागल छल से देखू ने काली माय भेंट करा देलनि। कनेक चूड़ी-सिन्नूर लऽ लेबै आ रतुका बस पकड़ि बिदा भऽ जयबै तऽ भोर सँ भोर गाम पहुँचि जायब। बुढ़बो कें आइ-काल्हि मोन नीक नहि रहैत छैक दाइ। ताहि पर सँ ई अभगला पेरि कऽ मारि देलकै ।

हम कहलिऐ- हे एकरा अभागल नहि कहियौ । भगवती एकरा सन भाग सभ कें देथुन। अहाँ सन काकी आ बालेश्वर सन काका एकरा भेटलैक। अपना माय-बाप रहितैक तऽ एतेक स्नेह कहाँ सँ भेटितैक। ई अहाँ सभ कें कहियो दुःख नहि देत। देखै ने छिऐक कोना आँखि नोरायल छैक ओकरो ।

आगाँ मोतिया आ पाछाँ बसौलीबाली बिदा भऽ गेल। एम्हर ट्रेन सेहो कखन ससरि गेल से बुझबो ने कयलहुँ । हमहूँ रेलक पटरी पार करैत घर दिस बिदा भऽ गेलहुँ। बसौलीबालीक हृदय सन जँ सभ स्त्रीक हृदय उदार भऽ जाइक तऽ अपन बेटा-बेटी लेल केओ किएक मरत। आब रौदक धाही एकदम कम भऽ गेल छल ।

*

चँचरी पुल

ठाम-ठाम गोल बन्हने लोक सभ जमा भेल छल। बुढ़बा सभक बैसकी सेहो दू दिन सँ साँझ-भोर मण्डप पर भऽ रहल अछि। एखन धरि कोनो समस्याक समाधान नहि भेल अछि। बर्त्तनियाँक आँगन मे ओकर भाउज तीन दिन सँ अन्न-पानि त्यागि कऽ प्राण देबाक लेल तैयार छैक। नैहर सँ समाद आयल छलैक जे ओकर बापक हालत ठीक नहि छैक। बुढ़बा दू-चारि दिनक पाहुन छैक। जे घड़ी, जे छन्न बीति रहल छैक। लगै छैक जेना दुल्हीबाली आब अपन बापक मुँह नहि देखि सकत।

गायत्री पीसी केँ तँ मात्र अपने चिन्ता छनि। भारक सभ ओरिआउन भऽ गेल छैक। साँझ मे गौर बनत आ भोर सँ भोर किरीन फुटऽ सँ पहिने पाँचो टा भरिया केँ विदा कऽ देब। दस बजे सँ पहिने मधुश्रावणीक पूजा पर बैसि जेबाक छैक। जाधरि ससुराक नूआ, लहठी आ गौर नहि पहुँचतैक ता धरि कनियाँ पूजा पर कोना बैसतीह। पन्द्रह दिन सँ गायत्री पीसी एको बेर अपन कृष्ण-कन्हैयाक नाम नहि लेने होयतीह। जे दिन-राति धोकड़ी मे माला लेने खेत-खरिहान घुमैत रहैत छलीह से कन्हैयाक नाम छोड़ि दिन-राति भार-दोरक सरमजाम एकट्ठा करबाक पाछाँ अपस्याँत छलीह। ओ अलगे छाती पीटैत छौड़ा सभ केँ गरिया रहल छलीह। सौंसे गामक जनी-जाति सेहो अपन घरक काज-धाज छोड़ि चँचरी पुलक गप्प करैत छल। पुलक चँचरी आ खाम्ह केँ, के खोलि कऽ हटा देलक तकर कोनो पता नहि चलि रहल छलैक। जँ, पता होयबो करतैक, तऽ केयो ओकरा लोकनिक नाम अपन मुँह सँ खोलबाक हेतु तैयार नहि छल।

असल मे पछिला बाढ़ि मे जे पानि अयलैक ताहि सँ तऽ चँचरी पुल केँ किछु

नहि भेलैक। लोकक अबरजात केहन बढ़ियाँ बनल छल। मुदा दोसरा खेपक पानि मे, ओ पुल बहि गेल। बाढ़िये तेहने छलैक, तऽ पुलक कोन दोष। ताहू मे चँचरीक पुल ।

फुलेसरा जखन-तखन भरि टोल घुमि-घुमि कऽ एतबे खिस्सा बतिआइत छल। दैब रो दैब ! हम आब पैसठि पार करब मुदा एहन बाढ़ि कहियो नहि देखलहुँ। नेना सभ घेरि-घेरि कऽ ओकरा सँ बाढ़िक खिस्सा सुनैत छल। एहि काज लेल ओकरा सदिखन छुट्टी रहैत छलैक। कहिया-कहिया बाढ़ि आयल आ कोन बान्ध डूबल, किनकर दलान धरि पानि गेल, चँचरी पुल कोना बनल, सभ खिस्सा ओकरा ठोरे पर रहैत छल। अगत्ती छौड़ा सभ कें ओकरा खौंझयबा मे बड़ मोन लगैत छलैक। जखन-तखन घेर लैत छलैक, बाबा हौ! चँचरी पुल बला खिस्सा सुनाबऽ ने ! असल मे भेलै एना, दोसरा खेप जे बाढ़िक पानि ठेललकै तकरा रातिये मे पुल बहि गेल। कोना ने कोना मलहटोलीक किछु छौड़ा सभ जान जोखिम मे दऽ कऽ पुलक चँचरी आ खाम्ह सभ कें छानि-छानि कऽ अपन-अपन घर ढुकओलक। चारि दिनक बाद जखन धारक तेजी कने मद्धिम भेलैक, तखन सभ छौड़ा चँचरी पुल कें फेर सँ अपने सभ मिलि कऽ दुरूस्त करबाक नेयार कयलक। बाढ़ि मे कोनो जनो-मजूरीक काज नहि भेटैत छलैक, तैं विचार भेलैक जे पुलक मरम्मति करबा मे आर जे काठ-बाँस लागत हमरा लोकनि अपने सभ मिलि कऽ तकर जोगार करब । पुलक काज तऽ सभ कें छैक। तैं जे पैदल चलत तकरा सँ एक टाका, साइकिल सँ जायत तऽ दू टाका आ रिक्शा आकि स्कूटर सँ जायत तऽ दस टाका वसूल करबै। ककरो अधलाहो नहि लगतैक। कारण, पुल टुटला सँ सभ परेशान छल। एहि गाम सँ ओहि गाम डाक्टर-बैद, सर-कुटुम, हाट-बजार बन्द छल ।

पराते सँ छौड़ा सभ लागि गेल आ दू सँ तीन दिन मे पुल कें ठाढ़ कऽ देलक। पूर्व जकाँ फेर सभ जाय-आबऽ लागल। पैसो देबा मे केयो आनाकानी नहि करैत छल । बेगरता तऽ सभ कें छलैके ।

आब सहे-सुस्ते सभ नीक कमाय लागल छल आ लोभ सेहो बढ़ऽ लगलै। एहि बीच बाहर-बाहर सँ जे परदेशी सभ बाढ़िक नाम सुनि, अपन लोक-वेद सँ भेट करबाक हेतु गाम आबय लागल, तकरा सभ सँ ओकरा लोकनि बेसी बसूलऽ लागल। जेहन मालदार लोक बुझाइ तकरा सँ तेहने वसूली करय। ताहि पर ओकरा सभ कें, अपनो मे किछु झंझ-मंझ भऽ गेलैक। लोभ जे ने कराबय। ई बात सहे-सुस्ते लोक थाना मे पहुँचा देलक। थानेदार साहेब पहुँचलाह तऽ सभ छौड़ा सभ ओतऽ सँ पतनुकान लऽ लेलक। केकरा जान भारी भेलैक अछि जे ओकरा लोकनिक पता-ठेकान कहत जे बाढ़ि मे बहल चँचरी पुल के जान पर खेलि कऽ पानि सँ छानि अनलक आ फेर तीने दिन मे पुल के दुरूस्त कऽ लोक कें चलबा योग्य बना देलक । नाम जऽ केओ थाना-पुलिस लग खोलत, तऽ ओकर टांग-हाथ तोड़बा मे ओकरा कतेक काल लगतैक। तैं सभ अपन-अपन मुँह सीबि लेलक।

थाना-पुलिसक गेलाक बाद राता-राती सभ ओहि चँचरी पुलक खाम्ह, चँचरी आ बाँस केँ निपत्ता कऽ अपनो सभ नुका रहल। थानेदार साहेब घुमि-घामि कऽ लोक सभ केँ आस्वासन दऽ बिदा भऽ गेलाह जे- पता मिलने पर सभ को ठीक कर देगा ।

थानेदार तऽ चलि गेलाह मुदा एम्हर पुलक एहि पार आ ओहि पारक लोक बेहाल भेल छल। ककरो किछु नहि फुरा रहल छल । सभ केँ तऽ बुझले छलैक जे के सभ चँचरी पुल केँ तोड़लक अछि। मुदा बिलाइक गरदनि मे घंटी के बान्हत ? ताहि लेल केयो तैयार नहि भऽ रहल छल। गोलैसी होइत-होइत सभ फुलेसरा बुढ़बा केँ पकड़लक। ओकरा मण्डप पर आनल गेल आ सिखा-पढ़ा कऽ पठाओल गेल। जे छौड़ा सभ केँ जाकऽ कहऽ- चँचरी पुल जते जल्दी भऽ सकय दुरूस्त कऽ दौक। हमरा लोकनि थाना-पुलिस लग नहि जायब। थाना-पुलिस हमरा लोकनि केँ कोनो सदिखन काज देत। तैं हमरा लोकनि अपने मे मेल-मिलाप सँ एकटा जायज भाड़ा बान्हि देबैक। बेरोजगार जे जबान सभ एहि काज मे लागल अछि तकरो पेट चलतैक आ समय-समय पर ओही टका सँ पुलक मरम्मतिक काज सेहो होइत रहत। फुलेसरा बुढ़बा जेना-तेना डेराइते-डेराइते एक झुण्ड नेना-भुटका केँ संग लऽ मलहटोली दिस बिदा भऽ गेल। चँचरी पुलक मरम्मतिक जोगार मे। एकटा निर्जीव चँचरी पुल आ प्रकृति दुनू मिलि कऽ लगैए जेना सौंसे गाम केँ एकसूत्र मे बान्हि देलक ।



मैयाँ

दरबज्जा पर शंख बजिते मैयाँ आँगन मे हड़बिड़ड़ो मचा दैत छलीह– यै जेठ जनी, कतऽ छी ?

बौआक पूजा लगैत अछि भऽ गेलनि। जल्दी होउ । किसुनमा कतऽ गेल– जल्दी सँ कहियौ एक डोल पानि टटका लऽ आनत; दलान बला कल सँ ।

ताबते मे किसुनमा चहकि उठल-मैयाँ, अहाँक पाछे मे हम ठाढ़ छी। सुझैए नहिये ने, आ अनेरे अनघोल करऽ लगैत छी। बौआ तऽ भोजन काल अपने लोटा मे जल लऽ कऽ आँगन अबैत छथिन। हम तऽ दरबज्जे पर छलिऐ, मालक घर मे गोबर उठबैत। अहाँक कहऽ सँ पहिने हम सब काज छोड़ि, चट्ट दऽ डोल अखारि, खूम कल चला कऽ डोल भरि, खूम कनकन पानि पैर धोबाक लेल ओसाराक नीचा मे आनि कऽ धऽ देलिऐक ।

मैयाँक लग मे एकटा टुटलाहा बियनिक डाँट कहाँ सँ हाथ मे भेटि गेलनि, लगली किसुनमा कें खेहारऽ–

ई छौंड़ा बड़ मनबढ़ू भऽ गेल अछि। कोनो टा बात तऽर नहि जाय देत। सभ सँ एकरा उपरे रहबाक चाही। देखू तऽ, छौड़ाक डल। हमरा पाछाँ मे आबि कऽ ठाढ़ भऽ गेल तऽ हमरा कोना सूझत। कोनो कि लोकक पीठ पर आँखि होइत छैक। हमरा किएक ने सूझत। सूझैत नहि छौक तोहर बाबा कें, जे टोइया दैत रहैत छौक ।

किसुनमा कतऽ चुप रहऽ बला, कहऽ लागल– हमर बाबा के तऽ आइ तीन

बरिस सँ नहि सुझै छै। ओ तऽ निट्ठाह आन्हर भऽ गेलैक। ओइ बेरी जे पोखरि पर बला स्कूल पर बड़ी दूर सँ डाकदर सभ आयल छलैक, ताही मे बाबा कें मोतियाबिन्दक ऑपरेशन भेल छलैक। बाबा परहेज करिते ने छलैक, तऽ आँखि कहाँ सँ बनतैक। आर बिगड़िए गेलैक। बुढ़बा ककरो बात मानै छै थोड़बे। ऑपरेशन करा कऽ पराते सँ लाठी टुकटुकबैत चलि गेलैक ओ बोरिंग लग बला गाछी दिस !

आब मैयाँ के नहि रहि भेलनि। ओकरा दबारैत बजलीह– एँ रौ, तूँ ई कोन खिस्सा लऽ कऽ बैसि गेलें ! रौ ! देख तऽ सीता सुन्दरि कतऽ छथुन। बारी सँ एखन धरि नहा कऽ बहरायल नहि भेलनि अछि। इहो कतेक काल मे नहाइ छथि से नहि जानि। मोहरमनि कतेक बाल्टी पानि आनि कऽ बाड़ी मे धऽ देलकनि जे एखन धरि सधबे नहि कयलनि अछि । किसुनमा जो जल्दी सँ आ कहुन गऽ बहरयबाक लेल ।

किसुनमा बाजि उठल–छोटकी मलिकाइन तऽ आइ माथ मलै छथिन। कहै छलथिन जे आइ देरी लागत ।

–कतेक बतकुट्टनि करब जनैत अछि छौंड़ा ! कहुन जे जल्दी सँ बाड़ी सँ बहरा कऽ घरं जाथि। बौआ आँगन मे आबि जयताह तऽ एक पहर आर बाड़ी मे बैसल रहिहथि। हिनका लोकनि कें बेरो नहि बुझाइत छनि। एहनो कतौ सुस्त लोक भेल अछि ।

ताबत जेठजनी ठाँव–पीढ़ी कऽ कऽ तैयार छलीह। ओम्हर छोटकी आँगन मे सासुक संग किसुनमाक बकतूति सुनि धड़फड़ायल बाड़ी सँ अपन कोठली दिस पड़यलीह।

किसुनमा भभाकऽ हँसैत दुरूक्खा दिस भागल आ फेर दुरूक्खा सँ घुमि मैयोंकें कहि गेलनि– मैयाँ, खड़ामक खटखट सुनैत छी, बौआ आँगने दिस आबि रहल छथि। मैयाँ चट्ट दऽ ओसारा पर अपन ओछाओन पर जा बैसि गेलीह । बौआ आँगन आबि पैर धो अपन भोजनक पीढ़ी पर जा बैसि गेलाह। भोजन आरम्भ करबा सँ पहिने माय सँ पुछैत छथि– माय अहाँ भोजन कयलहुँ ?

हुनक प्रतिदिनक दिनचर्या छल । बिनु माय कें पुछने कौर नहि उठबैत छलाह। मैयाँक जबाब छल– जेठ जनी अहाँक भोजन करयबा सँ पहिने हमरे भोजन करबैत छथि। भूख नहियो रहैत अछि तइयो ओ किएक मानतीह।

मैयाँ बड्ड भागमन्ति छथि। सभ बाल–बच्चा आज्ञाकारी । मैयाँ आब वयस सँ मैयाँ भेलीह अछि। मुदा हुनक ई नामकरण सासुर बसलाक किछुए दिनुका बाद भऽ गेल। सासुर मे बड़कीटा आँगन । ताहि मे चारि पट्टीदार। सासु तीन देयादनी। ताहि पर सँ सभ मिला कऽ नौ टा देओर आ सात गोट ननदि। मैयाँ सभ मे जेठ।

मैयाँ नान्हियेँटा सँ बड़ कहबैका छलीह। तहिना भगवान सासुर मे सभक जेठ बनाकऽ पठा देलथिन। आँगन मे जे कोनो करतेबता होइक, सासुओ सभ हिनके विचार

लेथि, तखने कोनो भार-दोर आकि बेटी-पुतोहुक बेटी-बाकस साँठल जाइक। मैयाँ कखनहु कोनो काज मे पयर पाछाँ नहि करथि। सौंसे परिवार कें संग लऽ कऽ चललीह। आइ मैयाँक सौंसे घर भरल छनि। सभ पर मैयाँक दबदबा छलनि। ओहि आँगन मे कोनो पुतहु अपन सासुओ सँ कम सँ कम छौ मास आकि वर्ष दिन मुँह सँ बजैत नहि छलीह। सभ काज करैत छलीह मुदा भाषा संकेतक रहैत छल। एक बेर तऽ हद भऽ गेल। गाम मे दुर्गास्थान पर बाहर सँ कोनो महात्माक प्रवचन छलनि। भरि आँगनक लोक प्रवचन सुनऽ चल गेल । भटसिम्मरिबाली कनियाँ एसगरि आँगन मे बैसि चाउर बीछैत छलीह। सीता सुन्दरि अपन भानसक ओरिआओन मे भनसाघर मे ढूकल छलीह। मैयाँक बाकसक कुँजी जे ओसारा पर टाँगल रहैत छनि से निपत्ता छल। मैयाँ छटपटा रहल छलीह । भटसिम्मरि बालीकें बूझल छलनि मुदा ओ मुँह सँ कोनो बजितथि तैं इशारा सँ कहलनि। तहिया मैयाँ कें हुनक एहि आचरण पर बड्ड क्रोध भेल छलनि ।

एम्हर मैयाँक बाकसक कुंजी किसुनमा अपन डराडोरि मे बान्हि घुमैत छल। किसुनमा कें लोभ छलैक जे मैयाँक संग ओहो प्रवचन सुनऽ जायत। मैयाँ ओकरा छोड़ि कोना जयतीह। मुदा से ओकरा बिसरा गेलैक आ दोस-महिमक संग गुल्ली-डंडा खेलयबा मे बाझि गेल। मैयाँ बिनु बाकसक कुंजी भेटने कोना जयतीह। महात्माजीक आइ आखिरी प्रवचन छल। चढ़ाबाक हेतु सभ वस्तु-जात सरिया कऽ बाकस मे रखने रहथि ।

आइ सभ चढ़ौना चढ़ाओत, मैयाँ खाली हाथ कोना जयतीह। कहाँ सँ गायत्री दाइ मैयाँक संग करबाक हेतु पहुँचि गेलीह । चलू काकी अबेर भेल ! महात्माजी कें छूटल-बढ़ल लोक काल्हियो दान-दक्षिणा देथिन। महात्माजी एखन दुर्गास्थान पर दू-चारि दिन आओर टिकताह। मैयाँ अछता-पछता कऽ विदा भऽ गेलीह।

किसुनमा कें जखन मैयाँक कुँजी मोन पड़लैक, तखन अपस्याँत भेल दौड़ल आँगन आएल, मुदा आँगन मे मैयाँ कें नहि देखि हबोढकार भेल कानऽ लागल। मैयाँक माँझिल बेटा शंकर कें जखन बात बुझबा मे अयलनि तऽ ओ सटका लऽ दौड़लाह ओकरा मारबाक हेतु। मुदा ताबत मैयाँ आबि हुनक छड़ी अपन हाथ पर लैत रोकि लेलथिन । मैयाँ किसुनमाक गलती आ पुनः पश्चाताप पर अपने दुखी भऽ कानऽ लगलीह। बेटा कें रोकैत कहलथिन- की करबै, छोड़ि दियौ बाल गोपाल छैक। कोनो चोरि करबाक मनसा सँ थोड़बे ई हमर कुँजी रखने छल। एकरा तऽ इच्छा छलैक हमरा संग प्रवचन सुनबा लेल जयबाक हेतु। ई तऽ सदिखन हमरे मे ओझरायल रहैत अछि। लगैत अछि जेना पूर्व जन्म मे ई हमर सन्तान रहल हो। मैयाँक स्नेह देखि किसुनमा आर हुनक देह मे लपटा गेल आ आँगनक लोक मैयाँक ई व्यवहार आँखि फाड़ि देखैत रहि गेल।

*

वैतरणी

जाड़क दिन, रौद मे बैसि अखबार पढ़ैत छलहुँ कि डाकपिउन खट् सँ चिट्ठी फेकि विदा भऽ गेल। चिट्ठी देखि दौड़लहुँ।

अखबार तऽ सभ दिन पढ़िते छी, मुदा ई टेलिफोनिया युग मे अबस्से कोनो आत्मीये लोक होयत जे चिट्ठी लिखलक अछि। सेहो लिफाफ मे, ताहि पर सँ बेस भरिगर।

उनटा-पुनटा कऽ देखलहुँ चिट्ठी। कलकत्ताक छल। अबस्से गुलाबक होएत। लगैए गुलाब कतेक दिनक गप्पक मोटरी सभ खोलि कऽ राखि देलक अछि, एहि लिफाफ मे।

हँ भने मन पड़ल, पछिला एक वर्ष सँ दुनू गोटा मे गप्प छल जे एहि बेर छठि सँ लऽ कऽ सामा भसेबा धरि गामे रहब। दीयाबती सभ अपने ठाम पर मनाओत। दियाबाती मे जँ गाम चलि जायब तऽ घर अन्हारे रहत।

ओना तऽ लक्ष्मीजी हमरा लोकनि सँ अनेरे छीह कटैत रहैत छथि। लऽ दऽ कऽ एकटा दीयाबाती मे आस रहैत अछि, जे कनेक हमरो लोकनिक घर दिस हुलकी मारती। जँ घर बन्न कऽ गाम चलि जाएब तऽ ओहो आस समाप्त।

चिट्ठी मे कयकटा कारण लिखलक अछि, समय पर नहि पहुँचबाक आ संगहि हमर समय केहन बीतल, गाम मे, तकर विवरण।

आब इएह ने फुराइत अछि, जे चिट्ठी कहाँ सँ शुरू करू। ओकरा तऽ पहिलुक दिनक सभ देखल छैक, मुदा से आब कहाँ छैक। ने आब ओ देवी, आने ओ कराह ।

ओना आर जे कही मुदा पावनि-तिहार गामे मे नीक लगैत छैक। छठिक थाकनि एम्हर उतरबो ने कएल कि सामा बनेबाक भूत धीया-पुता पर सबार भऽ जाइत छैक ।

एहि बेर छठिक भिनसुरका अर्घ्य दिन घाट पर सँ घुरले छल लोक सभ, कि नीता चट्ट दऽ सानल माटि लऽ पहुँचि गेल- काकी सामा बना दिअऽ !

-अँय हे! एखने कोन धड़फड़ी छह। लोक कनेक खायत-पीयत। पाँच घर बेन बाँटत। तकरा बाद ने ई सभ काज करत। ओ जिद्द कऽ बैसि गेल, से तऽ नहि हयत काकी! अहाँ खा-पीबि लिअऽ, ताधरि हम बैसब । मात्र सामा-चकेबा टा नहि ने बनबाक छैक। अहाँ खाली सामा-चकेबा बना दिअऽ। चुगिला आ वृन्दावन छोटकी पीसी सँ बना लेब। चुगिला बनाबऽ लेल एखन धरि सनक जोगार नहि भेल अछि। तैयो बाँचि जायत आर कतेक वस्तु सभ। से सभ तऽ हमरा अपने बनाबऽ पड़त। सतभइँया आ भइया-बटतकनी चुन्नुआँ कहैत छैक, हम बनाएब। छौड़ा बड़ मौगमेहर छैक। कतबो दुर-दुराउ तइयो मौगी मे घुसिआइत फिरत। कतबो मना करैत छिऐक, जे पुरुष ई सभ वस्तु नहि बनबैत छैक। तऽ हमरा सभ सँ झगड़ा कऽ लैत अछि आ कहैत अछि, एतेक जे गामक हाट पर सामा-चकेबा बनल बिकाइत छैक, से कि मौगीए सभ बनबैत छैक।

हम टारबाक लेल कहलिऐ- हे, सामा-चकेबा तऽ बड़का गामबाली बहिनदाइक हाथक बड्ड सानक होइत छनि । हुनकर सामाक आँखि-नाक केहन उरेहल होइत छनि !

एतबा सुनितहि नीता ठठाकऽ हँसऽ लागल। हम ओकरा मुँह दिस तकलहुँ तऽ ओ बाजि उठल-जा! बड़कागामबाली काकी तऽ मरि गेलथि। हुनका सँ हम सामा बनाबऽ आब कतऽ जाउ। एम्हरे दू-चारि दिन मे हुनकर काजो होयतनि। हमरा लेल ई सूचना दुःखद छल। हमरा नहि रहि भेल। पूछि बैसलियै- किएक, की भेल छलनि ?

पछिला बेर गाम आएल छलहुँ तऽ देखने रहिअनि हाथ मे खड़ाम पहिरि, घुसिकि-घुसुकि कऽ सभ दिन साँझू पहर अमोल आँगन जाइ छलीह समदाउन गाबऽ लेल। एकदिन हमहूँ धोपचट मे पकड़ा गेल रही। मोलन माय बेटीक दुरागमनक वस्तु-जात देखबा लेल बजौने रहथि। बड़कागाम बाली बहिन जिद्द धऽ लेलथिन- से आइ तऽ नहि मानल जायत। बहुत दिन भऽ गेल अहाँक मुँहक गीत सुनना। हमरा हुनक आग्रह टारब पार नहि लागल।

नीता बाजि उठल- से की कोनो मरऽ बाली छलथिन। खोराक बड़ बढ़ियाँ छलनि। अपने दुआरि पर बैसल भोर सँ साँझधरि रंग-बिरंगक गीत सभ बेस टोप-टहंकार सँ गबैत रहैत छलीह। हुनकर बाड़ीक बीचमे एकटा कलकतिया आमक गाछ छैक ने, ताही

पर घोड़नक बड़कीटा छत्ता छलैक। भोरे उठि ओ ओहीठाम बैसि कऽ मुँह हाथ धोथि। से आने दिन जकाँ, ओइ दिन कान्ह पर नूआ राखि आंगन सँ घुसकैत-घुसकैत बाड़ीक मुँहथरि पर पहुँचले छलीह कि ओम्हर सँ चारि-पाँच टा खुरलुच्ची छौड़ा सभ लग्गी लगा ओहि घोड़नक छत्ता कें खसा देलक। छौड़ा सभ तऽ पड़ा गेल, मुदा हुनका तऽ देह पर सँ घोड़न झाड़लो ने भेलनि । जाधरि लोक सभ कें बात बुझबा मे आयल ताधरि घोड़न हुनका सौंसे देह पर पसरि हबकि लेलक । लोक सभ पकड़ि-धकड़ि कऽ घर लऽ गेलनि, सौंसे तेल-कुड़ लगौलक। मुदा ओ ओही स्थिति मे तीन दिन धरि पड़ल रहलीह आ फेर विदा भऽ गेलीह। मुँह सँ एक घोंट पानियों कहाँ घोंटल भेलनि । वैतरणी करयबा लेल बाछी तकाइते रहल, ता प्राण छुटि गेलनि ।

सभटा बात सुनि मन मे एक्के टा बात आएल जे भगवान ककरो पर एना भऽ कऽ किएक लागि जाइत छथि। जीबऽ तऽ नीक जकाँ नहिये दैत छथिन, मरबोक समय संसारक आगाँ तमाशा बना कऽ राखि दैत छथिन। बेचारी जुआनीये मे दू बेटाक माय बनला बाद बिधवा भऽ गेलीह। जेना-तेना भरि टोलबैयाक फटकिया-बिछिया आ कोठी-मोड़ा पाड़ि दुनू बेटा कें पोसि कऽ जवान बनओलनि। दुनू कें विवाह भेलैक। बेराबेरी दूटा पुतहु धरि अयलनि, दुनू कें बाल-बच्चा भेलैक। दुनू बेटा परदेश मे कमाय लगलै। लोक कें लगलनि जे आब बड़कागाम वाली कें दिन फिड़ि गेलनि। मुदा भगवान कें सभक नीक कहाँ देखल जाइत छनि। एकाएकी दुनू बेटा स्वर्गवासी भऽ गेलनि। पहिने छोटका तखन जेठका । घर मे सभ प्राणी कोनहुना दिन बितबैत छल। कहियो अधपेटा भोजन कऽ तऽ कहियो पानि पीबि । नहि तऽ फेर टोलबैयेक आस ।

प्राते अमोलक दलान पर पंच बैसल। बड़कागाम बालीक काज कोना हएत। हुनकर दुनू मसोमात पुतहु आ तीनू पोता पंचक सोंझा माथ झुका बैसि गेल। बड़का पोता जकरा गरा मे उतरी छल से पंचक सोझा कल जोड़ि कऽ ठाढ़ भऽ गेल। छौड़ा बाजल जे हमरा सभ के कोनो आय-उपाय नहि अछि से अहाँ सभ कें बुझले अछि। हमर गराक उतरी कोनहुना उतरि जाय तकर ओरिआउन कऽ दिअऽ !

पंचलोकनि अपना सभ मे विचार कऽ निर्णय सुनओलनि– हुनका श्राद्ध तऽ फेर दोहरा कऽ नहि होयतनि। बेचारी दुःख-सुख काटि कऽ जे दस कट्ठा जमीन तोरा सभ लेल छोड़ि गेलथुन ताहि मे सँ ओ सड़कक कात बला पँचकठबा जमीन बेचि लयह, ने तऽ भरना राखऽ। हमरा लोकनि तऽ विचार देबऽ जे बेचिए लयह, जे सभ काज नीक जकाँ निमहि जेतऽ। भरना मे ओतबा टका नहि भेटतह। बेचारी खाता-भोगता छलीह। बेचारी एहनो अवस्था मे जे दूइयो कऽर खाइत छलीह से नीक-निकुत । सौंसे टोल मे जतऽ कतौ काज-करतंबता होइक, बड़-बड़ी हुनके हाथक लोक खाइत छल। भला हुनका काज मे बर-बड़ी कोना नहि बनतनि ।

पंचक अतिरिक्त ककरो ई निर्णय नहि अरघलैक। मुदा कएल की जायत। रहबाक छै तऽ गामे मे। मगनू मिसर लगले अपन तोरा सँ टाका बहार कऽ उदारता देखओलनि ।

भोज-भातक ओरिआओन होमय लागल। विवेकी लोक ओहि भोज मे पानीयो पिउलक अनिच्छा सँ आ अविवेकी लोक सभ खूब पसरि कऽ एक साँझ भात-दालि, बड़-बड़ी आ दोसर साँझ चूड़ा-दही आ खाजा-बुनियाँ खयलक । मुइनिहारिक गुणगान करैत ढकरैत विदा भऽ गेल ।

सुनबा मे आयल जे हुनक सम्पूर्ण परिवार कतेक दिन धरि अपन घर-दुआरि मे पेटकान लधने रहल। एहि हेतुए नहि जे ओ मरि गेलीह। जथाक नाम पर जे ओ पांच कट्ठा उपजाउ जमीन रहैक से हाथ सँ चलि गेलैक, तेँ ।

ककरो उद्धारक एहि सँ नीक व्यवस्था की भऽ सकैत छैक। अनेरे लोक हुनक वैतरणी करयबा लेल बाछी तकबा मे अपस्यांत छल। समाज मे एखनो धरि तेहन-तेहन पुरौधा सभ कुंडली मारि कऽ बैसल छथि जे बिनु बाछिये केँ सम्पूर्ण परिवार केँ वैतरणी पार करयबाक सामर्थ्य रखैत छथि ।

इएह सभ सोचैत-सोचैत चिट्ठी लिखबाक उत्साह समाप्त भऽ गेल । आब काल्हि देखल जयतैक ।



जुमरातन

छोटे बाबू के बौआ स्कूल गेलै से अखनी तक लौट के न अयलै हे । का कहीं दीदी, मतारी जे औधें मुँह खटिया पर पड़लै, उठ के पानीयो न पिलकै। ककरा हिम्मत हइ ओकरा समझाबे के ।

अपने तो छोटा बाबू गोंग भेल हइ । कुछ बोलबे न करइ हइ। आइ चारि दिन भेलै। छोटे बाबू के दोस अरूण बाबू गली-गली छान मारलथिन कहीं बौआ के पता नइ चलल ।

हमरो मन केना-केनादन कर रहलइ हे । जहिया से बौआ भुलाइल हइ आँख उठाबे के मने न करइ हइ । और उठैतहीं बौआक चेहरबा आँख तऽर नाचऽ लगइ हइ।

अरूण बाबू थाना-पुलिस सगरो बौआक नाम लिखबा देलथिन आ ओकर फोटो भी कहाँ दन एकबार मे छापे खातिर दे अइलथिन ।

सबसे उपर तो अल्लाताला है दीदी। बेगर उनकर मेहरबानी के कौन बच्चा मिल सकऽ हइ कोनो इन्सान के ।

सगरो लोग-बाग मनौती मना रहलइ हइ। हमहूँ सोनमा के साथ हाईकोर्ट के मजार पर गेल रहलियै। कहाँदन वहाँ के मौल्वी साहब सबकुछ एक क्षण मे बतला देबऽ हथिन ।

बौआ के मिलला पर छोटे बाबू दूनू परानी मिलके चादर चढ़ाबे जयथिन। वहाँ के बड़ा नाम हइ दीदी ।

सोनमा के भौजाइ गोंग भऽ गेल रहइ। वहीं देखाबे से अब बोल-बतिया रहलइ हइ ।

मौलबी साहब से पुछली जे बौआ कहाँ मिलतइ ! हजूर कनी देर तऽ चुप रहलन फेर आँख खोल के कहलन– जाओ लड़का के बदन का कोई कपड़ा बिना धोया हुआ ले आओ, फिर पता चलेगा।

भोरे छोटे बाबू के यहाँ से बौआ के देह के गंजी लाके रखले छिऐ।

कनेक काल जुमरातन चुप रहल, फेर आँखि सँ दू बुन्द नोर चूबि गेलै। जल्दी सँ आँचरक खूँट सँ पोछैत फेर कहऽ लागल– की कहू दीदी, हमरे हाथ के ऊ बौआ हइ। ओकर छठिहार मे सगरो बौल–बत्ती हमरे संझला बेटा लगलकै। संझला बिजली के काम करइ हइ। खूम भोज–भात भेल रहलइ। हमरा दू गोर नया नुँआ मिलल रहइ। मर–मिठाइ से तो घर भर गेलइ। दू दिन तक बाल–बच्चा खाइत रहलै।

केकरा–केकरा घर ने सोइरी मे काम कइली। अपने के आबे से पहिले गोदाबली मेमसाहेब रहलथिन। उनकर पाँचो बच्चा हमरे हाथ के रहलनि। तीन बेटी–दू बेटा, एक सँ एक लाल–गुलाब। कोनो परब मे हमरा नइ भुलइत रहलथिन। केकर–केकर ने सेवा कइली।

अपन दुनू हाथ उपर उठा कऽ फेर बाजऽ लागल– दीदी। एकरा मे बड़ जस छै। एतऽ एतेक स्टाफ छै, पर केकरो घर मे कानो बर–बिमारी, दुःख–सुख सबसे पहिले हमरे खोजाहट शुरू। ओ जे ललमुनियाँ छै, हमरा देख–देख के जड़िते रहै छै। भला एकरा मे हमर कोन कसूर । लोग–बाग पुछै छै काम के चाम के नइ । कहबीयो हइ – काम पियारा की चाम पियारा !

एकेबेर जुमरातन चुप भऽ जाइत अछि। लगै छै जेना फेर अपन जीवनक घटना–दर–घटनाक पन्ना उनटाबऽ लगैत अछि– दीदी, हमर आदमी के बहाली गोरा लाट साहेब कयलथिन। गोरा साहेब बुझलिऐ ने दीदी ?

बड़े कड़क मिजाज के रहलथिन। सब उनका से डरैत रहे। पर हमरा आदमी बड़ा निडर रहलथिन। गोरा साहेब के अपना काम से खुश कर देलथिन। फेर की रहय। कोना–ने–कोना गोरा साहेब अपने आफिस मे काम पकड़ा देलथिन।

होते–हबाते थोड़े दिन के बाद हमरो स्कूल मे धरा देलथिन। स्कूल मे बहाली भेल रहइ तऽ खाली एगो बड़की बेटी शबनम रहै गोदी मे। बाकी छओ गो एतही अयला पर भेलइय।

दीदी, की बिगाड़लिऐ उपर बाला के, दू दिन के बेमारी मे हमर आदमी के उठा लेलन। डा० हकीम जाबत आब–आब, बिदा हो गेलन। अखनो सोचै छीऐ दीदी, तऽ दिन पहाड़ लगै हइ। पापी पेट जे ने कराबे।

ई सात गो बच्चा के मुँह देख के जीबै छिऐ।

ई सभटा दुःख कोनो एक दिनक नहि छलै ओकर। कतेक बेर एहेन-एहेन कतेक खिस्सा दोहरा चुकल छल जुमरातन। सुनले-सुनाएल घटना लोक बैसिकऽ चुपचाप सुनैत रहैत छल। ककर मजाल छलैक जे बीच मे टोक-टाक करय।

ओना तऽ स्कूल मे एक छोट कर्मचारी छल मुदा ओकरा सँ सभ डेराइत छल। ओकरा सँ ठीके सभ कें काज पड़ैत छलैक। सत्ते! काज केनाइ केयो ओकरा सँ सीखय। दू दिनक छुट्टी लैत छल तऽ हम सभ अनाथ जकाँ भऽ जाइत छलहुँ।

टेबुल पर एक ढाकी धूरा लागल। ने कत्तहु पीबाक पानि आ ने केओ चाहक लेल पुछऽ बला। मुदा पावनि-तिहारमे परबी माँगऽ काल पचीस गोट।

ओना ओकर व्यक्तित्व एकदम प्रभावहीन छलैक। मुदा वास्तव मे स्थिति विपरीत छलैक।

गेहुँआ रंग, दुब्बर-पातर छरहर देह, पातर मुँह आ छोटे-छोटे बिज्जी सन आँखि। मुदा देह मे कमाल के फुर्ती एहू वयस मे। एक्को क्षण, ओकरा केयो एकठाम बैसल नहि देखि सकैत छल। कखनहु कोनो बाबूक हेतु चाह-पानक जोगार मे गेल अछि तऽ कखनहु कोनो कागज पर मैडम सँ साइन कराबऽ गेल अछि। स्कूलक लड़कियो सभ जुमरातन मौसी-जुमरातन मौसी कहैत बेहाल भेल रहैत छल।

हमरा स्कूल मे ज्वाइनक किछुए दिनक बाद जुमरातन रिटायर भऽ गेल। रिटायर कयलाक बादो जुमरातन स्कूले मे नहि, टीचर सभ घरो मे जाकऽ भेंट-घाँट करैत रहैत छलैक। टीचर सभ ओकर बुढ़ापा, स्नेह आ सेवा-भावना कें देखि यथाशक्ति सहयोग दैत रहैत छलैक।

एम्हर किछु दिन सँ जुमरातन देखाइ नहि पड़ैत छल, से हम गंगा सँ पूछि बैसलहुँ- गंगा, जुमरातन आइ-काल्हि देखाइ नहि पड़ि रहल अछि। ठीक अछि ने !

परबी मांगऽ ओ नहि अबैत अछि तऽ सुन्न लगैत छैक ।

ओकरो परबी मंगबाक ढंग खूब नीक लगैत छल। ईद रहय तैयो, होली-दशहरा रहय तैयो, रोजा रखैत छल तखनहुं, आबि कऽ सोंझा मे ठाढ़ भऽ जायत- दीदी! आजकल रोजा चल रहलइअ ! हम सब आज्ञाकारी जकाँ ओकरा हाथ मे किछु सिक्का धरा दैत छलिऐक। कोनो पावनि मे जखन ओ नहि अबैत अछि तऽ सभ ओकर खोज करैत छैक।

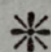
गंगा एतबा सुनिते बाजि उठल- अरे जुमरातन दीदी का सक्या ! एक तो बुढ़ापा, तेकरा पर से उनकर बड़का दमाद बड़की बेटी के झड़का कऽ मारि देलक आ दोसर

बिआहे कऽ लेलक। पांच गा छाट-छाट बच्चा एकरा घर मे लाके राखि देलकै। जवानीक दुःख तऽ काटि लेलकै बेचारी, बुढ़ापा केना काटत। ओ तऽ चैन सँ मरबो ने करतै।

घटना सुनि कऽ सभ टीचर सन्न रहि गेल। ओकर जान, नहि जानि केकरा-केकरा लेल ने हाजिर रहैत छल। नहि जानि कतेक बेर ककरा-ककरा नहि साहब, मेमसाहब, बड़े बाबू आ जुलेखादीदीक आक्रोश सँ बचओने होयत। मुदा आइ ओकरा बचाबऽबला केओ नहि छैक।

जुमरातनो विचित्र मनुक्ख छल। प्रसन्न हो तऽ प्राण अर्पण कऽ देत, अप्रसन्न होयत तऽ जन्म-जन्म के दुश्मन। केयो दूटा बोल प्रेम सँ बाजि देत, केयो दू पैसाक वस्तु प्रेम सँ हाथ पर राखि देलक, बस जुमरातन ओकरे। आइ एतेक वर्षक बादो जुमरातन सभ कें ओहिना मन छैक। एहन हड़ताल, प्रदर्शन, धार्मिक उन्माद, जातीय विद्वेष सँ भरल समाज मे ओहि अनपढ़ आ अनगढ़ प्राणी सभ कें आँखि खोलि दैत छैक। ओकरा लालची कहल जा सकैत छल, मुदा ओकरा पर विश्वासो कयल जा सकैत छल। ओकरा मे एहन किछु गुण छल जे मनुक्ख कें खाली मनुक्ख बनबैत अछि, आर किछु नहि ।

आइ ओहन लोक समाज मे तकलो पर नहि भेटैत अछि। तैं जुमरातन सभकें मन पड़ि जाइत छैक।



छाहरि

बरखा समाप्त होइते पावनि-तिहारक मेला लागि जाइत छैक। सभ अपन-अपन घर-आंगन, बाड़ी-झाड़ी साफ सुथरा करऽ मे जुटि गेल।

दिया-बातीक आब थोड़बे दिन बाँचल छैक मुदा सुधा आइयो ओहि रधियाक बाट तकैत हाथ-पर-हाथ धयने बैसल अछि। सुधाक आँखि मे एखनो ओहि सुन्दर चंचल बालिकाक प्रतीक्षा छैक। ओ नान्हिटा छौड़ी अपन नान्हिटा हाथ मे खुरपी आ छोट सन पथिया लेने आँगन मे प्रवेश करत। पहिरबाक नाम पर ओकरे उतारल ओ ललका छीटबला फ्राक आ पछिला दिन महादेव स्थानक मेला मे कीनल पितरिया बाली ओकरा कान मे चमकैत हैत। केश सभ उजड़ल-पुजड़ल मुदा ओहि मे ओ ललका फुदना बला चोटी लागल। प्रसन्नता सँ भरल ओकर आँखि, भोर होइते सूर्यक लालिमाक संग आँगन मे प्रवेश करत आ ओकरा माय केँ जगा बाड़ी-झाड़ीक सफाइ मे जुटि जायत। एहि काज लेल ओकरा केयो अढ़बैत नहि छलैक। ओ अपने घड़ीक सूइया जकाँ भोर होइते आँगन पहुँचि जाइत आ सुधाक माय केँ जकरा ओ काकी कहैत छल, स्नान-पूजा लेल बिदा कऽ चट्ट दऽ बाड़ी-झाड़ीक एक-एकटा घास-पातक सफाइ मे लागि जाइत छल। आँगनक चारू खूट चमका कऽ राखि दैत छल। सुधाक आँगन आ दरबज्जा पर जे ओतेक रंग-विरंगक फूलक मेला लागल रहैत छैक से रधियेक कृपा सँ। किछु फूल सुधाक पसिन्नक तऽ किछु रधियाक । कखनो काल तऽ रधिया अपन जिद्दक आगाँ सुधाक किछु नहि चलऽ दैत छलैक। सुधा ओकरा सँ हारि मानि लैत छल । उनटे माय सँ बातो सुनऽ पड़ैत छलैक।

ओ छोट गुड़िया सन रधिया अपने तऽ स्कूल नहि जाइत छल मुदा घड़ीक सूइया

जकाँ सुधाकें तैयार होयबा लेल हल्ला करैत रहैत छल। सुधा बहिन, तुलसीचौड़ा लंग रौद चलि गेल, अहाँक स्कूलक घंटी बाजि जायत, जल्दी चलू। देखू आब देरी करब तऽ तऽ... रौद दुरूक्खा दिस भागल जाइत अछि ! अपने देरी हयत । फेर हमरा दोख नहि देब।

सुधाक स्कूल विदा होइते ओहो अपन खुरपी, पथिया काँखतर लऽ संग धऽ लैत छल। सुधा अपन स्कूल ओकरे घरक लग सँ जाइत छल। तहिया गामक बेटी-डाँटी सड़क धऽ कतहु नहि जाइत छल। नैहर-सासुर जयबाकाल सबारीक पर्दा लागल रहैत छलैक। ओना पीच बला सड़क धरि केयो गामक बेटी दिन मे नहि बहराइत छल। तें सुधा सेहो अपन स्कूल ओकरे घरक दोग सँ बहरा तेतरिक गाछक तर बाटे अगला क्वार्टरक चक्कर लगबैत पहुँचैत छल।

सुधाक माय जयबाकाल कतबो आवेश करितैक, तैयो रधिया रोटी-भात कहियो नहि लैत छल आने किछु खाइत छल। हँ, जँ कोनो पुरी-पकबान वा किछु आन तरहक विशिष्ट वस्तु रहितैक जँ हाथ मे धऽ आ अपन पहिरना सँ झाँपि बिदा भऽ जाइत छल। बुढ़िया जकाँ सुधाक माय कें बुझबितैक- देखू काकी ! माय जनेर पीसी कऽ भोरे रोटी पकाकऽ खेत पर चलि गेलै आ बाबू ओकरा सँ पहिने बहरा गेलै। देरी होइ छै तऽ गिरहथ आउर हल्ला करऽ लगैत छथिन। ओम्हर किसना आ मलतिया हमरे बाट तकैत होतै। हम जेबै तखने दुनू खायत। ततेक बदमाश छै जे घरक पछुआड़ मे नुक्का-चोरी खेलाइत रहत मुदा बकरी बेचारी मेमिआइत रहै छै।

किसना आ मलतिया दुनू रधियाक पीठ परक छलैक। दुनूकें छौड़ी जान-प्राण सँ बेसी मानैत छल। माय रोटी पकाकऽ राखि जाइत छलैक मुदा दुनूक देखभाल रधिये करैत छल।

दीया-बातीक आब बेसी दिन नहि रहि गेल छल। रधिया आमक गाछी सँ सुन्दर चिक्कनि माटि आनि बाड़ीमे ओहि नीमक गाछ तर जमा करऽ लागल। नीमक गाछ तऽर बहाड़ि-सोहारि कऽ रधिया घरौंदा बनौनाइ शुरू कऽ देलक। एहि बेरक घरौंदा तीन मंजिला रहत। चारूकात खूब हवादार, सभ घर मे खिड़की, दू बगली ओसारा। सबसँ उपर बला कोठली मे कनियाँ-वर रहत। निचला घर भनसाघर, भंडार घर, ताहि मे तीन टा कोठी बैसाओल गेल। अन्न सँ भरल रहत कोठी सभ। सभसँ निचला कोठरीक संग दलान। दलान पर बान्हल छल गाय, बाछीक संग । धान कुटबाक लेल उखड़ि-मूसरक संग जाँत-ढेकी सेहो ओसारा पर गाड़ि देलक। सुधा कहलक-मूसर काठेक रहतै । रधिया तमसा गेल। जिद्द धऽ लेलक जे सभ वस्तु माटियेक रहत । तखन रंगला पर एक रंग लागत । नहि तऽ भटरंग भऽ जायत ।

रधिया रंगति-ढंगति काल बेर-बेर पांती दोहरबैत रहय–पहिरने ओढ़ने कनियाँ-बर, निपने-पोछने आंगन-घर ।

नान्हिटा रधियाक वियाह भऽ गेल छलैक। ओकर वर ओतबेटा छलैक, जतेकटा रधिया छल। ओकर कक्का रस्सी सँ नापि कऽ बियाह ठीक कयने छल। जखन कखनो वर-कनियाँक गप्प होइतैक तऽ सुधा रधिया के खौंझाबय लगैत छल– गे राधारानी! तू कखन पहिरि-ओढ़िकऽ वर संगे सासुर जयबेँ?

ओकर जबाब होइत छल– एखन तँ हम छोट छी, जखन सियान भऽ जायब तखन हमर गओना हयत, आ हम नीक नुआँ, भरि बाँहि लहठी, पैर मे काड़ा पहिरि सासुर जाएब । तखन अहाँ देखि लेब । सुधा पुछितै-गे रधिया सतै-सत्ते कह तऽ, तोहर वर केहन छौक।

रधिया कहितय-दुर जाउ! अहाँ तऽ काजो नहि करऽ दैत छी। हमर बियाह भेलै तखन तऽ हम मौसीक कोरा मे सूति गेल रहियै । हम तऽ ओकर मुँहो ने देखलिऐ।

सुधा पुछितय- रधिया! तोँ अपन सासुर जाऽ अपन घर-दुआरि केँ अहिना रँगिहेँ। तोहर वर तोरा बड़ दुलार करतौक। एहन बात सुनि रधिया गम्भीर भऽ जाइत छल। अपन काज मे व्यस्त होइत कहैत छल- की जानऽ गेलिऐ !

सुधा स्कूल सँ घुरबा काल रधियाक आँगन होइते अबैत छल। रधियाक माय सँ जाधरि किछु एम्हर-ओम्हरक गप्प नहि करैत, ताधरि अप्पन आँगन नहि अबैत छल। रधिया किछु खयबाक लेल सेहो आग्रह करैत छल, मुदा ताहि पर ओकर माय ओकरा डाँटि दैत छल। ओकर माय कहैत छल- हमर सभक पानि नहि चलैत छैक, ई कोना किछु खयथिन। हिनका खुअओला सँ हमरा पाप हयत। सुधा ई सभ बात नहि मानैत छल। रोटी लेल उलाकऽ राखल अन्नक पथार पर सँ एक मुट्ठी लऽ सुधा फाँकऽ लगैत छल। रधिया अपन घर सँ कोनो पावनि-तिहारक परात किछु-ने-किछु चोरा-नुका कऽ सुधा केँ जरूर खुआ अबैत छल।

कनियाँ-पुतराक खेल एखन खतमो ने भेल छल कि सुधाक सेहो वियाह भऽ गेल । सुधाक वियाहक बाद रधिया सुधाक वरक खूब टहल-टिकोरा करैत छल।

सुधा फेर अपन सासुर आबि गेल आ अपन घर-गृहस्थी मे लागि गेल। एहि बीच रधिया खूब मोन पड़लैक मुदा भेंट नहि भऽ सकलैक। गाम सँ केयो अबैत छल तऽ ओकर हाल-समाचार जरूर पुछि लैत छल।

पुछला पर पता लागल जे रधियाक गओना भऽ गेल आ ओहो अपन सासुर गेल। गओनाक आठ वर्ष भऽ गेल मुदा रधिया माय नहि बनि सकल। रधियाक लाख विरोधक बावजूद ओकर सासु-ननदि ओकरा ओझा-गूनी सँ सेहो देखओलक, झाड़-फूक करबओलक। रधिया बेचारी सभ दुःख चुपचाप सहैत रहल। फूल सन रधिया पर सासुर मे खूब अत्याचार

भेल। छोट-छिन बातक बहन्ना कऽ रधियाक वर ओकरा पीटि दैत छल। एतबे नहि, कएक बेर घरो सँ बहार कऽ देलक। अन्त मे तंग आबि कऽ एक दिन ओकर छोट भाय किसना अयलै भेंट करऽ लेल, रधिया ओकर संग धऽ लेलक आ नैहर आबिकऽ बैसि गेल।

किछु दिनक बाद पता लागल जे रधियाक वर दोसर विवाह कऽ लेलक आ एकरे संग रधियाक बसल-बसायल घर उजड़ि गेल। एम्हर ओकर छोट बहिन मलतियाक विवाह भऽ गेल छल । ओ सासुर बसैत छल। किसनाक सेहो विवाह भऽ गेलै । ओकर कनियाँ खूब सुन्दर छलैक आ रधियाक खूब मान-आदर करैत छलैक । मुदा ई सभ कतेक दिन।

रधियाक भाइक घरमे रहब टोलबैया सभ कें बेसी अखड़ैत छलैक। तैं रधिया बेसीकाल अपन मुँह नुकओने रहैत छल। मुदा कतेक दिन भायक माथ पर बोझ बनल रहत, कतेक दिन घर मे पेटकान देने रहत ! तैं आब रधिया आन बोनिहारक संग खेत-पथार जाय लागल। कएक बेर बोनिहारक झुण्ड मे रधिया देखैत छल जे ओकरे लऽ के कनफुसकी भऽ रहल अछि। कएक बेर अपने काने सुनबाक मौका भेटि गेलैक। मुदा रधिया की बजिते? चुपचाप माथ झुकओने सभटा सुनि घर आबि घंटो एसकर कोन मे कनैत रहैत छल ।

ओकर बाप कयक बेर आर लोक सभ सँ कहबौलक जे आब बहुत भेलैक, एना कोना दिन बितत ! हम घर देखि अयलहुँ अछि। नीक घर छैक। दू टा छोट बच्चा छैक। तीन बरख पहिने घरबाली मरि गेलै। खाय-पहिरऽ के दुख नहि हेतै। मुदा रधिया जिद्द धऽ लेलक। किन्नहुँ तैयार नहि भेल। रधिया कहबा देलक किसना सँ जे बाबू के कहि दहिन- हम जन-मजूरी कऽ खायब आ अही घर मे अपन दिन गुजारि देब। कतहु सम्बन्धक बात जँ बाबू करत तऽ हम एही चौकठि पर कपार पटकि-पटकि जान दऽ देबै मुदा कोनो पुरुषक संग आब नहि जयबै ।

रधिया सत्ते पुरुषक सुख बुझि गेल छलैक। जे रधिया नान्हिये टा सँ दोसरक घर-आँगन, बाड़ी-झाड़ी, फूल-पत्ती सँ सजबैत रहल, घर-आंगन नीपैत-बहारैत रहल, ओकरे अपन घर नहि भेलै। अपन घर मे स्नेह आ दुलारक बदला लात-जूत्ता भेटलैक। ओकरा कोनो संतान नहि भेलैक, ताहि मे भला ओकर कोन दोष। तामस-पित्त पर किसना संगे नैहर आबि गेलै तऽ की भेलै ! ओकर सासुरक परिवार आकि ओकर घर बला एको बेर पुछारियो कयलक?

एहन सम्बन्ध सँ ओकरा घृणा भऽ गेल छलैक। केओ ओकर घरबलाक चर्च करै तऽ रधिया साफ मना कऽ दैत छल। कहैत छल- ओकर नाम नहि ले ! ओकर नाम सुनि हमर मोन ओकिआय लगैत अछि, करेज फाटऽ लगैत अछि।

टोलबैयो सभ कनफुसकी करैत-करैत थाकि गेल। लोक कें आब मोनो नहि छैक जे कहिया रधियाक विवाह भेलै, कहिया रधिया सासुर गेल आ बैरन ओतऽ सँ किसना संगे नैहरक चौकठि पर आबि कऽ बैसि गेल।

कतेक वर्षक बाद आइ सुधा ओही आंगन मे ठाढ़ अछि। की ई वएह आँगन छैक ? ओहि घास-पात सँ भरल आँगन मे सुधा अपन ओ रीडींग रूम तकैत अछि । जाहि ठाम ग्यारह वर्ष धरि स्कूल सँ अयलाक बाद अपन बस्ता रखैत छल। स्कूल सँ अयलाक बाद हाथ-मुँह धो जलपान कयलाक उपरान्त किछु नियमित सखी-बहिनपा सँ गप्प कऽ फेर अपन पढ़ाइ मे जुटि जाइत छल। ओही सँ सटल एकटा छोट भनसाघर जाहि मे ओकर कमजोर आ एसकरि माय ओकरा लेल यथासम्भव पौष्टिक भोजनक ओरिआओन मे लागल रहैत छल। पिता अलगे अपन कोठरी मे किछु आयुर्वेदिक पोथी आ दबाइक संग ओझरायल रहैत छलाह। मात्र भोजन आ सुतबा काल हुनका ओहि पोथी सभ सँ फराक देखने छल सुधा। घरक पछुआड़ मे बड़की टा एकटा लतामक गाछ। सुधा अपन सखी-बहिनपाक संग थुर्री सभ ताकि कऽ तोड़य आ झक्खा बना नियमित दुपहरियाक जलपान होइत छल। लताम सँ कनेक दूर आगाँ जमीरी नेबोक गाछ जाहि मे वर्षक किछु मास छोड़ि सालो भरि फड़ सँ लदले रहैत छल। लतामक बाद सभ बन्दरियां सेना ओहि नेबो पर चोट करैत छल। समतोला जकाँ ओकरा छिलि फाँके-फाँक हाथ मे लऽ नून-मिरचाइ संग गट-गट गिड़ि जाइत छल। कनेक हटि कऽ एकटा नीमक गाछ जे सभ बहिनपाक मनक मलिनता क्षणे मे आत्मसात कऽ लैत छल आ तकर बदला शीतल-स्वच्छ हवाक संग सभ दिन छाहरि प्रदान करैत छल ।

ओही नीमक गाछ तर आइ सुधा ठाढ़ भऽ रधियाक हाथक बनल रंगल-ढ़ंगल तैयार भेल घरौंदा, ओहि मे कनियां-बर बैसल, रंग-विरंग फूलक मेला ताकि रहल छल। कतऽ की रहबाक चाही ?

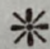
आब, ओकरा सँ ठाढ़ भेल नहि भऽ रहल छलैक। अनेरे धम्म दऽ ओहि नीमक गाछ तर बैसि गेल। आँखि ओकर मुना गेल छलैक । ताबत लगलै जेना रधिया वयह ललका छीट बला फराक पहिरने दौड़ल-दौड़ल आयल आ पाछाँ सँ ओकर आँखि मूनि लेलक। फेर खिलखिलाकऽ हँसऽ लगैत अछि आ कहैत अछि– सुधा बहिन, एहि बेर दिया-बाती मे पछिलो बेर सँ बढ़ियाँ घरौंदा बनाएब। अहाँ बीच मे टोक-टाक नहि करब । एतबा कहैत अपन काज मे जुटि जाइत अछि। आ फेर वएह गीतक पाँती दोहरबैत अछि– पहिरने-ओढ़ने कनियाँ-वर, निपने-पोछने आंगन-घर ।

ताबत पाछू पोखरि सँ सभ बहिनपाक आबाज एके संग सुनाइ पड़ैत अछि– तूँ आबि गेलें सुधा ? तूँ आबि गेलें सुधा ?

ओ दुनू हाथ सँ अपन कान मूनि लेलक। दरबज्जा परक इनार पर सँ परसा बाली काँख तऽर घैल आ हाथ मे डोल लेने बाजि उठल- ऐ सुधा बौआ कखन अयलहुँ ? आ एहि नीमक गाछ तऽर ठाढ़ की तकैत छी ? चलू घर।

सुधा परसाबाली केँ की जबाब देत ! ओकर सभटा तऽ एही ठाम हेरायल छैक। अपन बाल्यकाल, सभ सखी-बहिनपा, रधियाक सपनाक घरौंदा... सभ सम्बन्धक डोरि एहीठाम ओझरायल छैक। सुधा ककरा घर जायत? ओकर घर कोन छैक ? एहि सय बातक जबाब ओकरा कतऽ भेटतैक?

फेर ओकरा लगलैक जे एहि सभ बातक जबाब हमरा नीमक गाछक छाहरि मे भेटत । दोसर केओ नहि दऽ सकैत अछि। सभ घटनाक्रमक मूक आ प्रत्यदक्षदर्शी तऽ इएह नीमक छाहरि रहल अछि !



ठेस

स्टाफ रूम खचाखच भरल छल। स्टाफ रूम कें देखि केओ नहि कहितय जे आइ शहर मे बन्दक घोषणा छल। कोनो-ने-कोनो तरहें सभ पहुँचि गेल छल। जें कि पछिला दस दिन सँ शहरक प्रत्येक भाग मे लाउडस्पीकर सँ खूब प्रचार कयल गेल बन्दीक, तैं शहरक लोक सावधान छल। सभ अपन दफ्तर वा स्कूल-कालेज जयबाक ओरियाओन कऽ लेने छल। जनिका अयबाक छलनि दस बजे ओ नौ बजे पहुँचि गेल छलीह। बाट मे सवारी नहि भेटत, तकर चिन्ता सभ कें छलनि। बन्दीक मादे जे कोनो झगड़ा-फसाद होइत अछि से दस बजेक बादे। बन्द करबय वला सभ सेहो अपन-अपन घर सँ खा-पीबि कऽ विदा होइत होयत। ताबत एम्हर शहरक लोको सभ अपन-अपन आवश्यक कार्य अथवा बजार जनिका जायब आवश्यक होइत छनि, सकाले विदा भऽ जाइत छथि।

स्टाफ रूम मे मात्र माधवी दी नहि पहुँचल छलीह। टीचर सभ तऽ अपन-अपन नौकरी बचयबाक हेतु पहुँचि गेल छलीह । मुदा विद्यालय नहि आयल छल तऽ विद्यार्थी सभ । कोनो अभिभावक अपन बच्चा कें एहन हो-हल्ला मे विद्यालय कोना जाय देत।

आइ स्टाफ रूम मे तैं खूब जमघट छल। आइ कोनो काज नहि छैक, आ ने काजक चिन्ता। मात्र गप्प करबाक छैक। सभ अपन-अपन ग्रूप बना, गोलियाकऽ बैसि गेल छल। शिवरानी सेहो कोनहुना उठैत-बैसैत एतेक दूर सँ पहुँचि गेल तें सभ चाहक चिन्ता सँ सेहो निश्चिन्त भऽ गेल। बेसी ग्रूप मे गप्प भऽ रहल छल- के कतेक बजे उठल!

की-की भानस बनौलक। के तरकारी बनौलनि? केओ खिच्चड़ि आ आलूक साना बना कऽ आबि गेल छलीह। रीता तऽ भोजन के कहय, सँझुका जलपानोक व्यवस्था कऽ लेने छलीह। जयबा काल सबारी नहि भेटला पर विलम्ब भऽ सकैत छल। तैं स्थितिक सामना करबाक हेतु सभ तैयार भऽ कऽ आयल छलीह। मीना स्टाफ क्वार्टर मे छथि तैं अपन घर सँ पर्याप्त दूध अनलनि आ शिवरानी कें खूब बढ़ियाँ चाह बनयबाक फरमाइश कऽ रहल छलीह। चाहक पत्ती आ चीनीक भंडारी छल सोना, ओहो पहुँचि गेल छल तैं तकरो चिन्ता नहि छल।

विमलाक बेटीक एक मास पहिने विवाह भेल छलैक तैं ओ एतेक हड़बड़ी मे अलबम आनब नहि बिसरल छल। आइ सभ टीचर फोटो सेहो आराम से देखत। कारण आइ एहन-एहन काज करबाक हेतु पर्याप्त समय छैक। दस बजे सँ चारि बजे तक विद्यालय मे बैसबाक छैक। आन दिन तऽ विद्यालय पहुँचिते सभ अपन काज मे व्यस्त भऽ जाइत अछि। कएक दिन तऽ एहनो होइत छैक जे एक-दोसराक मुँहो नीक जकाँ नहि देखैत अछि। हाल-चाल बुझबाक कोन कथा।

ओना हाल-चाल पुछबाक नाम पर बेसी काल देखैत छी जे सभ एक-दोसराक साड़ीक प्रशंसा अवश्य करैत अछि। जहिया केओ कोनो नव आकि आकर्षक डिजाइनक साड़ी पहिरने अछि तऽ हुनकर प्रशंसा करब भरिसक केयो नहि बिसरैत छथि। तैं जे केयो ओहन भाग्यशाली होइत छथि तऽ ओ दिन बुझू हुनके छनि।

तैं आइयो सभ सँ पाछाँ विद्यालय पहुँचल छलीह लक्ष्मी आ सेहो पीयर सिफॉन साड़ी मे। व्यक्तित्व भगवानक बनाओल छनि, मुदा अपनहु कनेक बेसी सांकाक्ष रहैत छथि। तें कखनहु काल ओ किछु गोटाक ईर्ष्याक कारण सेहो भऽ जाइत छथि।

से, आजुक दिन छल लक्ष्मीक नाम। सभ बेरा-बेरी लक्ष्मीक साड़ी आ व्यक्तित्वक प्रशंसा कयलक। शिखा सँ नहि रहि भेलैक। ओ पूछि बैसल-लक्ष्मी दी ! ई साड़ी कतऽ लेलहुँ ? कतेक मे देलक ? बड्ड नीक लगैत अछि। मीना बाजि उठलीह- ओ साड़ी हुनके पर नीक लगैत छनि, तोरा पर नहि जँचतौक। देह मे मांसु तऽ छौके नहि। खाली हाड़े-हाड़ देखा पड़ैत छौक। शिखाक मुँह सुनिते लाल टरेस भऽ गेलैक। ताबत शिवरानी आ सोना मिलिकऽ सभक आगाँ बड़का-बड़का कप मे चाह आनि धऽ देलक। विमला, गीता आ पुतुल विवाहक फोटो देखबा मे तेना भऽ कऽ लीन छल जे चाहक आगमनक पता सेहो ओकरा सभ कें नहि भेलैक। सोना फेर जा कऽ मोन पाड़लक, दीदी चाह ठंढ़ा भऽ जायत।

शिखा एम्हर मीनाक प्रश्नक उत्तर देबाक हेतु मूड बना रहल छल। शिखाक डरें सभ त्रस्त रहैत अछि। सभ कें ओकर मूडक पता छैक। कखन ककरा पर बरसि जायत से नहि जानि।

शिखा ओना देखबा मे कोनो बेजाय नहि लगैत अछि, मुदा कनेक बेसी दुब्बरि अछि, आ सिफौनक साड़ी बेसी पातर, तैँ मीना एना बाजल रहथि। सहे-सहे सभ अपन-अपन टेबुल पर बैसल ग्रूप कें केहुनी सँ छुबि-छुबि कऽ संकेत कऽ रहल छल आ शिखा दिसि देखा रहल छल। अपन-अपन गप्प छोड़ि सभ चाह पीबा दिस ध्यान लगयबाक चेष्टा करय लागल । मुदा शिखा कें सभक संकेतक भान जेना भऽ गेलैक आ ओ चाह पीयब छोड़ि मीना लग जा बैसलि । हुनका सँ पुछलक– हमरा एहन साड़ी किएक नहि नीक लागत ? की सोचि अहाँ हमरा अपमानित कयलहुँ ? हमरा दू गोटाक बीच मे अहाँक बजबाक की आवश्यकता छल ? बहुत दिन सँ अहाँ के हम देखि रहल छी। हम अहाँ के नीक नहि लगैत छी। रीता कें अहाँ बेसी मानैत छी तैँ हमरा पर एना व्यंग्य कयलहुँ। फैशन ककरा कहैत छैक, से अहाँ की जानऽ गेलिऐक। आइ-काल्हि इएह फैशन छैक। हमरो सँ बेसी दुब्बरि सभ एहने साड़ी पहिरैत अछि। अहाँ के बाज़ऽ नहि अबैत अछि। क्लास मे लड़की सभ कें डँटैत-डँटैत डटबाक आदति भऽ गेल अछि। कखनहुँ, हमरा सँ अहाँ नीक जकाँ नहि बजैत छी। हम केहनो साड़ी पहिरी ताहि सँ अहाँ कें कोन मतलब। भविष्य मे फेर कखनहुँ एना टोका-टोकी नहि करब ।

सौंसे स्टाफ रूम मे सन्नाटा पसरि गेल। सभक आगाँ कप मे चाह ओहिना पड़ल रहि गेलैक। चाह पीबाक इच्छा सभ कें समाप्त भऽ गेल छलैक। एम्हर मीना दी शिखाक आगाँ कल जोड़ने गिड़गिड़ा रहल छलीह– शिखा माफ कऽ दे ! तोरा सभ सँ बेसी मानैत छियौक, तैँ कहलियौ । तोरा पर ई नहि नीक लगतौक। हम ठीके फैशन नहि जनैत छी।

मीनाक आँखि सँ दहो-बहो नोर बहि रहल छल। शिखा अपन गलती मानबाक हेतु तैयार नहि छल। सभ अपन स्थान सँ उठि शिखाकें बुझयबाक प्रयास करऽ लागल। अन्त मे बजैत-बजैत शिखा सेहो अपने कानऽ लागल।

एकरे कहैत छैक रंग मे भंग। आइ ककरो अनुमान नहि छल जे आजुक दिन एना बीतत। सभ शिखाकें दोष दैत छल। मीना तऽ, जे बजलीह से स्नेहवश। एक-दोसरा कें लोक अपना मे अहिना टोका-टोकी करैत छैक। ई तोरा नीक लगतौक आ ई तोरा नीक नहि लगतौक। लोक कोनो साड़ी वा कपड़ा कीनितो अछि तऽ एक-दोसरा सँ पुछिते छैक जे ई हमरा पर केहन लागत ।

ओहि विद्यालय धीया-पुता सभ भने नहि आयल, मुदा टीचर सभ कें शिखा जरूर ई पाठ घोखबा लेल विवश कऽ देलकै जे केयो केहनो कपड़ा पहिरि कऽ आबय, मात्र प्रशंसा करू, मीन-मेख नहि निकालू। आब पहिलुक समय नहि छैक जखनुक ई कहबी छलैक– आप रूचि भोजन, पर रूचि शृंगार ।

एखन दुइये बाजल छलैक, दू घंटा आर विद्यालय मे रहबाक छैक । सभ कें दिन पहाड़ लागऽ लगलैक ।

*

गृह-प्रवेश

बहिनाक चिट्ठी आयल अछि। ओकर मकान तैयार भऽ गेलैक। सविस्तार अपन मकानक बुझू जे खाका बना कऽ पठा देलक अछि। चिट्ठी पढ़लाक बाद लगैए जेना ओकर मकान रंगा-ढौरा कऽ गृह-प्रवेशक प्रतीक्षा मे ठाढ़ छैक आ ओ रंग-विरंगक मनोरथ बाँटि रहल अछि।

लिखलक अछि जे तों आठ दिन पहिने चलि आ । सभटा हाट-बजार तोरे संग करबाक अछि। हुनका संग जायब तऽ तोरा हुनकर स्वभाव बुझले छौक, बाटे मे झगड़ा भऽ जायत आ मोनक सभटा मनोरथ मोने मे रहि जायत। लिखलक अछि जे जँ आठ दिन पहिने आयब सम्भव नहि होउक तऽ चारियो-पाँच दिन पहिने अबस्स अबिहें, नहि तऽ घुरती डाक सँ जवाब दे।... हम गृह-प्रवेशक दिन तोरे सुविधा सँ राखब। ओना पंडितक कहब छनि जे ई दिन सभ सँ उत्तम, तखन जेहन तोहर इच्छा ।

बहिनाक मनोरथ पूर भेलैक से सुनि प्रसन्नता भेल। आइ बीस वर्ष सँ जखन कहियो भेंट भेल, तहियो आ चिट्ठी देलक, ताहू मे, ओहि घरेक सम्बन्ध मे बेसी गप्प करैत छल ।

कोनो महानगरी मे एकटा शुद्ध वेतनभोगी, कनेकटा जमीनक टुकड़ा कीनि, ओहिपर जेना-तेना घर ठाढ़ कऽ लेअय, तकरा हम हिमालयक सभसँ उच्च शिखर पर झंडा फहरायब सँ बेसी दुस्साहसी बुझैत छी ।

कखनो काल तऽ ओकर चिट्ठी पर क्रोध होइत छल। मन होअय जे आइ जँ

ओ अपने भेटैत तऽ बड़ बात कहितिऐक। पछिला चिट्ठीक गप्प सबटा मोन पाड़ि दितिऐक जे केहन अपन चना-चटपटीक पुड़िया सन गप्प सभ रखने रहैत छलें, से सभ आब कतऽ हेरा गेलौक। पोखरिक मोहार पर घंटा भरि गप्पबाजी, तकरा बाद आंगन ऐला पर लालकाकीक दुनका, मोन पड़िते एखनो लगैए जेना गाल भकभका गेल। आर की कहाँदन सब। मुदा आब ओकरो बुझाइए हमरे जेकाँ सभटा बिसरा गेल छैक। मोन रहि गेल छैक मात्र बालु-सिमेन्ट आ केबाड़-खिड़की ।

मुदा हमरा पछिला गृह-प्रवेशक अनुभव सभ एकाएकी मोन पड़ऽ लागल, तऽ झूर-झमान भऽ बैसि गेलहुँ। ओना एहिठाम एहन कोनो सम्भावना नहि, तैयो ओ भोगल सुख बिसरा नहि रहल अछि ।

बहिना सत्याक गृह-प्रवेशक अवसर पर कोना ओकर पतिदेव अपने आबि कतेक आवेश सँ लऽ गेलाह आ पहुँचैत देरी सभटा मनोरथ भंग भऽ गेल। सत्या सौंसे घरक जिम्मेवारी हमरा सौंपि अपने पूजाक ओरिआओन मे लागि गेल। भोजन मे की सभ बनतैक तकर चिट्ठा हमर हाथ मे धऽ देलक, संगे कखन कतेक पैसाक काज पड़तैक, से सौंसे घरक चाभी पर्यन्त। लगै छल कहाँ सँ एहि मे ओझरा गेलहुँ। मुदा पछिला रोटी खा, पछतीया बुद्धि अछि तें करबो की करी ।

ओकर सभटा सर-सम्बन्धी एकट्ठा भेल। सभक स्वागत-सत्कार। क्षणे-क्षण कने एम्हर आ, कने ओकरा देखि लिहें, भंडार घर कखनो खाली नहि छोड़िहें, ताला लागल छौक कि नहि ? जे केयो किछु मंगतौक कने अपने हाथें बहार कऽ कें दिहें ! तीन दर्जन बच्चा एकट्ठा भेल छैक, देखिहें कोनो वस्तु-जात दूरि नहि करय। हे! पूजाक हेतु जे भानस हेतैक, से भानस घर मे सभटा सामग्री एकट्ठा कयल छैक, कने अपने हाथें बना लिहें। साग बनब आवश्यक। साग नीक जकाँ सन्तिया माय सँ धोआ ले। मौगी बड़ अपरोजक छैक । ओहिना पानि मे डुबाकऽ राखि देतौ। हलुआइ आबि गेल छैक, सोझा मे ठाढ़ भऽ सभ वस्तु तौलबा दिहें।.....आँखि तर अन्हार भऽ रहल छल। एक भोर सँ ठाढ़ भेल-भेल डाँर टेढ़ भऽ रहल छल । एक कप चाहो चैन सँ पीब से नसीब नहि।

जेना-तेना पूजा-पाठ भेल। सत्या अपन नव घर मे प्रवेश कयलक। भोजक सभ ओरिआओन भऽ रहल छल। एकाएकी साढ़े ग्यारह बजे राति धरि लोक अबैत रहल। एम्हर अपना सभ कें खाइत-पिबैत दू बाजल। हम की भोज खायब, बुझू जे ओंठगन भेल। कते सप्पत देलक तऽ एकटा मधुर खा पानि पीलहुँ। पति-पत्नी दुनू कल जोड़ने ठाढ़। धन्य अहाँ जे एहन भोज नीक जकाँ निमहि गेल। तीन दिन धरि ओछाओन धयने रहलहुँ। ऊपर-नीचा करैत-करैत हाथ-पैर फूलि गेल छल।

सभटा बात नीक जकाँ बिसरलो नहि छल कि किरण दीक गृह-प्रवेशक

नोँत-हकार पहुँचल। मोन मे भेल जे हमरा ओहिठामक की करबाक अछि ! कने अबेरे कऽ जायब, हकार पुरब आ बिदा हएब।

मुदा कर्म मे से लिखल रहय तखन ने। ग्यारह बजे दिन मे बेटा केँ स्कूटर लऽ पठा देलक। ओकर बेटा कहऽ लागल- मौसी जल्दी चलीं। माँ रौआ के जल्दी बोलैले बा । रौआ जाब तबे माँ पूजा कर बैठी। हे भगवान! आब कोन उपाय करू। मोन मारि कऽ बिदा भेलहुँ। धीया-पुता केँ बुझा देलिऐक- तोँ सभ एखने सँ जाकऽ की करबेँ! भोजक बेर मे बाबूजीक संग चलि अबिहेँ । हम तऽ जाइ छी अल्हुआ जेकाँ घूर मे सीझऽ लेल ।

जकरे डर छल सएह भेल। जाइत देरी चूल्हि लऽग बैसा देलक। नव चूल्हि, काँचे जारनि। धुआँ सँ सौंसे देह गुलगुला गेल, आँखि लाल टरेस भऽ गेल, माथ घऽ लेलक। कनेको किछु खयबा-पीबाक इच्छा नहि। किरण दीक ननदि बड़ मखौलिया, ता जबरदस्ती सप्पत दऽ मुँहमे दूटा झोरायल बड़ी आ एकटा मधुर खुआ देलक ।

बच्चा सभक संग इहो खौंझा रहल छलाह- बहुत भेल आब, चलू ! एतेक नीक लोक बनबाक काज नहि। किछु आहे-माहे दोसरो दिन लेल रहऽ दिअऽ !

जहिना दिन बितैत छैक, लोक बात बिसरैत चलि जाइत अछि। किछुए दिनक बाद हमर डेरा सँ एक बाँस पर एकटा नव मकान बनब प्रारम्भ भेल। मकान मालिक बेसीकाल टूरे पर रहैत छलाह। गुड़िया माय अपने भोरे भानस-भात कऽ, दिन भरि जन-मजूरमे ओझरायल रहैत छलीह। पलखति भेटला पर एक कप चाह पीबाक बहन्ने दिन भरिक मिस्त्री-मजदूरक परेशानी आ अपन भविष्यक योजना सुना हड़बड़ाइत बिदा भऽ जाइत छलीह। ई क्रम जानि नहि कतेको दिन धरि चलैत रहल आ ओ क्षण आबि गेल जकर प्रतीक्षा गृहस्वामीक संग-संग पड़ोसियो केँ रहैत छैक। हमर नोकर बुधना केँ भोजक नाम सुनिते मोन चपचपा जाइत छलैक, मौका भेटिते खोद-बेद करऽ लगैत- ऐँ यै मलिकाइन, भोज मे की सभ रहतैक ? बड़-बड़ी तऽ रहबे करतै। दही खूम अहगर सँ देतैक की नहि ? मधुर कोन सभ रहतैक? हे अपना गांवक पछबारि टोल मे, लाल बाबाक काजमे कते सकरौरी परसायल रहैक। लरायन मालिक बड़ा हथकट्ट छैक । बच्चा सभ के पात पर नीमन जकाँ नहि देत । मंगबै तऽ कहत- तोँ सभ छुता कऽ छोड़ि देबेँ ! जी जरि जाइत छल ।

कहैत छलिऐक- ऐँ रौ! घर मे बड़ी सोहाइत नहि छौक, ई कोनो गाम छैक, जे दही तोरा पात पर ढारि देतौक । मुदा ओकर जबाब रहैत छलैक- भोजक दोसर बात होइत छैक । जनानी सभ कोनो भोज खाइ छै ! तैं अहाँ नहि बुझैत छी ।

गृह-प्रवेशक दिन गुड़िया माय भोरे कहि गेलीह- अहाँ बोलाहटि भरोसे नहि रहब, जाहि वस्तुक खगता होइक कने अपने काज बुझि बेर पर जुमा देबैक ।

हमहूँ जल्दीसँ अपन आश्रमक काज सरिया लेलहुँ। बुधना कें तऽ भोजक दिन ततेक फुर्ती भऽ जाइत छैक जकर कोनो ठेकाने नहि! आन दिन सोर पाड़ैत रहबै आ ओकरा लेखें धन्न-सन। मुदा ओहो आइ सकाले सभटा काज कऽ चाटी-पाटी कऽ कें निश्चिन्त। बच्चा सभ स्कूल गेल। बुधना कें कहलिऐ, चल कनेक भोजघारा सँ भेल आबी, कहती जे ओना कऽ घर पैसि कहि एलिअनि आ एलिहे बेरे पर।

दुरस्थक पाहुन आ सर-सम्बन्धीक जुटान भेल जा रहल छल। आ तकरा संगे धीया-पूताक फौज। धीया-पुता कें तऽ आँखिए मे भूख। ओम्हर हलुआइ भोजक तैयारी मे जुटल छल। घर मे फराक सँ एहन कोनो पनिपिआइक ओरिआओन नहि छल, जाहि सँ धीया-पुता कें फुसलाओल जा सकैक। सबहक मन चटपट करैत। भोज मे एखन छः-सात घंटा विलम्ब छल। बच्चा सभ अपन माय-बापक मुँह नोचऽ पर बीर्त। घरबैया सभ अपन-अपन मेकअप मे लागल, किनको कनेको होश नहि।

हमरा पहुँचैत देरी गुड़िया माय भरि पाँज कऽ धयलनि। बुधना कें बौआ नून् करऽ लगलीह आ नेहोरा करैत कहऽ लगलीह– लोक कें देखि लियौ। जल्दी अपन घर सँ किछु जलपान तैयार कऽ कें लऽ आउ। जो रे बुधना! तोहर ई गुण कहियो नहि बिसरबौ। छौंड़ाक देह पर तऽ अस्सी मोन पानि पड़ि गेलैक, हमरा दिस ताकि बुदबुदाय लागल।

उनटे पैर पर अयलहुँ। जल्दी सँ आलू, छीमी आ टमाटर काटि-धो प्रेशर कूकर मे तरकारी चढ़ओलहुँ। एम्हर बुधना कें कहलिऐ- तों आटा सानि जल्दी सँ पराठा बेलि-बेलि सूपमे रखने जो। से गनि कऽ पचासी टा परौठा बनाओल। डाँर-पीठ एक भऽ गेल। छौंड़ा हमरा पर कनमनाइत रहल- अनेरे पहिने गेलौं।

–भोजकाल जइतहुँ। अहाँ कें तऽ एहने काज रहैत अछि, ओझराहटि मोल लेने फिरैत छी। ओहो कहलनि। हम चुपचाप परोठा-तरकारी तौनी मे बान्हि छौंड़ा कें माथपर देलहुँ आ बिदा भेलहुँ। बाल-बच्चाबाली सभ अपन धीया-पुता कें खोआबऽ मे लागि गेलीह।

भोजक सामग्री तऽ गृह-प्रवेश सँ पहिने केओ छुअत नहि। सभ वस्तु बनि कऽ भंडार घर मे रखा रहल छल।

एम्हर गुड़िया माय अपन जमुनिया रंग, भारी-भरकम शरीर आ तिरपन वर्षक अवस्था पर बिनु ध्यान देने– अपने स्कीन कलर अर्थात् जामुनी रंगक लंहगा-चुनरी, ताहि पर सलमा-सितारा आ बिअहुती कनियाँ सन ओहि पर गोटा चढ़ल पहिरने। हाथ मे बड़कीटा हुडूक सनक सिन्दुरक कीया रखने। सींथ सँ नाक धरि खूब मोट कऽ सिन्दूर लेपने-'फैन्सी ड्रेश' प्रतियोगिता मे भाग लेनिहारि सन लागि रहल छलीह।

देखिते बुधना थपड़ी बजा जोर सँ हल्ला करऽ लागल- मलिकाइन ऐ मलिकाइन, आब ई नचतै ! छौंड़ा कें मुँह जतने जल्दी घर पड़ेलहुँ। लोक सब ओकर बकर-बकर मुँह देखऽ लागल छल। बड़ लाज भेल। बड़ बात कहलिऐ छौंड़ा कें । संगहि कान पकड़लहुँ जे आब ककरो गृह-प्रवेश मे हुलकियो मारऽ नहि जायब।

ताबत मे आगाँ राखल बहिनाक चिट्ठी उलहन देमऽ लागल- ऐं गे ! जूड़-शीतल दिन, भरि छाती पानिमे ठाढ़ भऽ बहिना लगओलहुँ आ सुख-दुःख मे एक-दोसरा कें संग देबाक सप्पत खयलहुँ । दुःख मे तऽ नहि, जीवनक एकटा एहन सुखक क्षण आयल अछि, जाहि मे तोरा संग सौख बँटबाक इच्छा होइत अछि, आ तों पाछाँ हटि रहल छें। आँखि सँ दू बुन्द खुशीक नोर चुबि गेल। आँचर सँ नोर पोछैत यात्राक ओरिआओन मे लागि गेलहुँ।

लगैए आब जाइए पड़त।



एगो छली सिनेह

नेहा वाल्यावस्था सँ चलिकऽ प्रौढ़ावस्था मे पहुँचि गेल अछि मुदा एखनो धरि ओकर आँखि ओहि रिक्शा पर टांगल छैक जे फेर ओ घुरिकऽ चलि आओत– अपन सबारीक संग। लगै छै जेना नेहा अपन ओहि दुरुक्खा मे मायक साड़ीक खूँट पकड़ने ठाढ़ रहत आ रिक्शा अबैत-अबैत ओकर सोझा मे ठाढ़ भऽ जेतै। ओहि पर सँ ओकर सिनेह, ओकर मायक सिनेह, उजरल-उपटल सन ओहि आंगन-घरक सिनेह, मुइल सन ओहि बाड़ी-झाड़ीक सिनेह, उतरतै आ सभक हालचाल पुछऽ लगतैक। एतबे नहि, नेहा लेल कोनो सनेस सेहो लेने ओतै। रिक्शा सँ उतरैत देरी ओकर माय सँ गऽर मिलि कहतै- सिनेह, हम आबि गेलौं! हमरा अहाँ आ नेहा सदिखन मोन पड़ैत छलौं। आर ऐ जड़लाहा आंगन-घर मे राखले की छै । नेहा सँ पूछतै- हम मोन पड़ै छलियौ कि नै ? आ नेहा लजाकऽ मायक साड़ी मे आर लेपटा जायत ।

मुदा ई सभटा आब एकटा इतिहास बनिकऽ रहि गेल छैक । जे सिनेह घुरिकऽ अयबो करथित तऽ ने आब ओ घर छै, ने ओ दुरुक्खा, ने ओ बाड़ी-झाड़ी, जकर चिन्ता सिनेह केँ सदिखन लागल रहैत छलनि। एम्हर, ने नेहाकेँ माय छै आ ने बाप, आ ने नेहे आब अपने ओहि अवस्था मे अछि जे मायक साड़ीक खूँट धऽ कऽ ठाढ़ रहत। आब ओहिठाम घर-दुआरिक कोनो चेन्हो नहि छै। शेष छै मात्र जोंतल-कोड़ल खेत आ ओहि मे लागल जजाति ।

ई सभ मोन पड़िते नेहाक आँखि नोरा अयलै। आ ओ अपने मोनकेँ दुत्कारऽ लागल छल जे ई सभ बात ओकरा एखन धरि किए मोन छै। किए ने बिसरि जाइए। एहि समाजक इएह नियम छै। एखनो धरि कहाँ कोनो खास परिवर्तन भेलैए। आइयो स्त्रीक वएह

स्थिति छै जे आइसँ तीस-बत्तीस बर्ख पहिने छलै। ओकर सिनेहक कोन दोख छलै, जे ओकरा अपन घर-आंगन, अपन बाड़ी-झाड़ी तथा एहि समाजक परित्याग कऽ कऽ अनिश्चित दिशा मे डेग उठाबऽ पड़लै !

आइयो धरि नेहाकेँ ओहिना सभटा दृश्य आँखि लग नाचि रहल छै, जे भीतरे-भीतर कतेक दिन धरि ओकर माय-बाप आ सिनेहक बीच विचार-विमर्श होइत रहलै आ अंततः ने सिनेह अपन विचार पर अडिग रहलि जे ओ एहि बच्चाक जन्म अबस्स देत। कतेक स्नेह छलै ओकरा मोन मे कोनो बच्चाक प्रति !

नेहा केँ अपन माय सँ कम कहियो स्नेह अपन सिनेह सँ नहि भेटलै। मुदा ओकर सिनेह केँ कहियो ककरो स्नेह नहि भेटलै। नेहा अपन मायक मुँहे सुनने छलि जे सिनेह जखन चारिये बर्खक छलि तँ ओकरा बियाहि देल गेलै। आ यौवनक देहरि पर डेग देलक, कि सिंउथ पोंछा गेलै। ओकर कोर सुन्ने रहि गेलै। ओकरा बड़ इच्छा छल जे हमर एगो बच्चा होइतय तथा हम ओकर लालन-पालन करैत जीवन बिता दितौँ। मुदा से आब कहुना सम्भव नहि छलै ।

गामक आने विधवा जकाँ ओहो अपन जीवन किछु खेत-पथार, बाड़ी-झाड़ी आ चरखा काटि व्यतीत करऽ लागलि छलि। सिनेह बेसी काल तँ उपासे रहैत छलि। कम्मे दिन चूल्हि पजारैत छलि। बेसी काल तँ नेहेक घर मे ओकर किछु संक्षिप्त भानस होइत छलै। जहिया कहियो पाहुन अबैत छलथिन, तखने सौंस भानस ओकरा घर मे होइत छलै आ तहिया किछु ने किछु नेहाक हिस्सा अबस्से राखल रहैत छलै ।

नेहा केँ जखन मोन पड़ैत छै अपन सिनेहक बतहपनी तऽ एखनो हँसैत-हँसैत लोट-पोट भऽ जाइत अछि। कोना ओहि दिन स्कूलसँ अबिते ओकर हाथसँ झोरा छीनि सिनेह कहने छलै जै चल जल्दी, देख तोरा लेल बाटी मे की राखल छौ झाँपिकऽ! बाटी उघारला पर खाली पानि छलै । सिनेह छाती पीटऽ लागलि छलि। नेहा आ नेहाक माय खूब हँसलि छलि ओकर सोझपनी पर। नेहाक माय ओकरा बुझौने छलथिन जे बर्फ कतौ एतीकाल धयल रहलैए। बेकारे पाइ बेरबाद केलौं। मुदा ओ नेहाकेँ ओहि बाटीक पानि पिआइये कऽ दम लेने छलि। नेहाक बापो सुनि कऽ हँसल छलथिन ।

ओना तँ सिनेहक ओहिठाम बहुतो पाहुन-परक अबैत छलथिन मुदा एकटा पाहुन जे बेसी काल रहैत छलथिन से हुनकर सतौत देओर रहथिन। ओ रहैत तँ छलथिन बेसीकाल आन ठाम, मुदा बेसीकाल हुनकर खोज-पुछारि करय हेतु अबैत रहैत छलथिन। सिनेहकेँ सेहो कतोक बेर नेहा हुनके ओहिठाम जाकऽ रहैत देखलक। सिनेहक सभ सँ लगक संबंधी नैहर छोड़ि वएह सभ छलथिन। तेँ सिनेह जे किछु चरखा आदि सँ उपार्जन करैत छलीह, से हुनके लोकनि केँ पहुँचा दैत छलीह, अथवा वएह सभ आबिकऽ लऽ जाइत छलाह ।

नेहा कें ओहिना मोन छै। कमलेश माने सिनेहक देओरक पत्नी सेहो कतेक-कतेक दिन धरि आबि कऽ रहल छलथिन, नेहा कें इहो मोन छै जे ओहि बेर गाम मे अमर चरखाक खूब जोर छलै। बाहर सँ ट्रेनिंग वास्ते महिला-पुरुषक टीम आयल छलै। सिनेहक आंगन ओकर केन्द्र बनल छलै खूबे लोक नाम लिखौलक आ सभ कें चरखा भेटल। किछु खगल महिलाकें नीक रोजी भेटि गेलै। सिनेह तँ सहजें । दिन-राति एतेक खटैत छलीह जे देवी-देवता सभ ओहि बीच हुनका बिसरा गेल छलथिन। नेहाक माय कतेको बेर मना कयलथिन जे अपन देहोक चिंता करू । की करब एतेक हांइ-बांइ कऽ कऽ। मुदा सिनेह कमलेशक बेगरता सुनाकऽ चुप करा देथिन। कमलेशकें एकटा नीक खादीक चद्दरि चाहियनि। कमलेश कें कुरताक कपड़ा चाहियनि। कम्मल नहि हेतनि तऽ गाम-गमाति कोना जयताह....। आ सिनेह सदति हुनकहि फरमाइस मे लागलि रहैत छलीह। एम्हर कमलेश बेसी-बेसी दिन रहौ लागल छलथिन। नेहा सेहो खूब गप करथिन आ खिस्सा सुनबथिन। मुदा ई क्रम बेसी दिन धरि नहि चलि सकलै। एक दिन जे गेलथिन पन्द्रह दिनुक हेतु, से तीन-चारि मास धरि एकटा चिट्ठीयो नहि देलथिन।

एम्हर सिनेहकें एक पलक चैन नहि छलनि। दिन-राति अपन आ नेहाक घर एक कैने रहैत छलीह। राति-राति भरि जागि नेहाक माय सँ बतिआइत रहैत छलीह। नेहा दुनू गोटाक गपक विषय तँ नहि बूझय, मुदा एतबा अबस्स अनुमानि लेने छलि जे कोनो गंभीर बात जरूर छै जे माय आ सिनेह दुनूकें बेचैन बनौने छै।

मुदा ई बात बेसी दिन धरि नुकायल नहि रहलै। टोल-परोसक दाइ-माइ लोकनिक कान ठाढ़ भेलनि। हुनका लोकनिक खोजी आँखि सिनेह कें ठिकिया-ठिकिया कऽ देखऽ लगलनि। सिनेहक दिनानुदिन बदलैत शारीरिक स्थिति ककरोसँ नुकायल नहि रहलै। सिनेह सेहो आब कतौ आयब-जायब बन्न कऽ देलनि। टोल मे फुसुर-फुसुर होबय लागल आ ई फुसुर-फुसुर क्रमिक तेज होइत गेल।

आब टोल मे गप्पक विषय इएह भऽ गेल छलै। जे सुनय, सएह छाती पीटय। सरोवर पीसीक कान धरि जखन ई बात पहुँचल तऽ पहिने सिनेहक घर आबि हुनका नीक जकाँ निहारलनि, कुशल-क्षेम पुछलनि। फेर नेहाक माय सँ ओकर मोनक थाह लेबाक हेतु पहुँचलीह। जखन कतौ कोनो थाह-पता नहि चललनि तँ अपन मोने मे जे-जे फुरलनि से सभ बात बना टोल-परोस मे बिलहि देलनि ।

एम्हर सिनेहक स्थानीय गार्जियन जे दूरक सम्बन्धे भैंसुर छलथिन, सेहो अपन निर्णय परोक्ष रूपें सुना देलथिन जे समाजे मे जँ रहऽ चाहैत छथि तँ जेना-तेना गर्भकें दूरि करा लेथु, अन्यथा काटिकऽ ओही घर मे गाड़ि देबनि। नेहाक माय सेहो खूब बुझौलथिन जे भैंसुरक बात मानि लिअ। मुदा ओ अपन निर्णय पर अड़ल रहलीह। चाहे हमरा ई गाम किए ने छोड़य पड़य, हम ऐ बच्चाक जन्म देबे करब।

कमलेश तँ जेना हिनक क्यो रहबे ने करथि। कतोक चिट्ठी देलथिन मुदा हुनका लेल धैनसन। हुलकियो मारय नहि अयलथिन। आखिर ओहो एकटा प्रतिष्ठित पुरुष रहथि– एहन छोटछीन बातक किए फिकिर करथि। हुनको तँ एहि समाज मे रहबाक छनि ने!

सिनेह आब सभ दिस सँ निराश भऽ अपन दिशाहीन यात्राक तैयारी मे लागि गेल छलीह। नेहाक माय बहुत बुझौलथिन मुदा ओ आब कोनो डर, भय, सामाजिक बंधन, माया-मोह सभ सँ मुक्त भऽ गेल छलीह। कमलेश दिससँ सेहो ओ पूर्णत: निश्चिंत भऽ गेल छलीह। हुनका नीक जकाँ बुझा गेल छलनि जे कमलेशक ओ प्रेम मात्र हुनकर क्षणिक शारीरिक सुख सँ छलनि। ओ एकटा स्वप्न छल– जाहि मे ओ ठकल गेलीह। जेना कि आदिकालहि सँ होइत आयल छै– पुरुष द्वारा स्त्रीक शोषण। आ ओ ताही प्रेम-जाल मे ओझरा कऽ छटपटा रहल छलीह। जकरा ओ जीवनक संबल बुझने छलीह, ओ धोखा छल।

अंतत: ओ सांझ आबि गेल। आ सिनेह चुपचाप रिक्शा बजा ओहि पर चढ़ि कनैत, हिचुकैत बिदा भऽ गेलीह। नेहाक मायक गऽर धऽ कऽ खूब कानल छलीह। नेहो खूब कानल छलि। आब फेर भेंट होयबाक कोनो संभावना नहि छल। आन बेर कने कालक लेल कपिलेश्वरो जाइत छलीह तँ बाड़ी-झाड़ी देखैत रहबाक अनुरोध कऽ जाइत छलीह। मुदा एहि बेर किछु नहि। खाली नोर, हिचकी आ भावहीन आँखि ।

रिक्शा बिदा भऽ गेल। नेहा दुनू माय-बेटी ओकरा तकैत रहि गेलि। कतेक दिन नेहा डरे ओकर घर दिस तकबो नहि करैत छलि। कतेक दिन धरि नेहाक घर मे नीक जकाँ भानसो नहि भेलै आ ने भरि पेट क्यो खयबे कयलक ।

मुदा टोलक लोककेँ एहि घटनाक कोनोटा खबरि नहि छलै। ककरो एहन कोनो आस सेहो नहि छलै। नेहाकेँ बेर-बेर बुझाओल गेलै जे जँ क्यो पुछय तँ नहि किछु कहब। कहि देबै जे हमरा किछु नहि बुझल अछि ।

सिनेह ओना दू-चारि दिनुक लेल कतोक बेर बाहर जाइत छलि। मुदा एहि बेरक जायब, आन बेर सनक नहि छलै। दुइये दिनुक बाद सभक कान ठाढ़ भऽ गेलै। लोक अपना मे जे-से बतिआय लागल ।

ओहिबेर गाम मे खूब बियाह भेल छलै। गाममे तँ सहजे, टोल-परोसमे सेहो। आइ मधुश्रावणी छलै। ओना तँ नेहाक माय ककरो आंगन नहि जाइत छलीह। मुदा नैना दीदीक आंगनक बात! दुनू मे खूबे हेम-छेम छलनि। तेँ तऽ ओहि आंगन जाय लेल नेहाकेँ तैयार कयलनि। नेहाक लाख अनुरोधक बादो ओकरा लाल छीट बला फ्राक नहि पहिरऽ देलथिन। वएह करिया फ्राक पहिरा आँखि मे काजरकऽ देलथिन– ई कहैत जे बहुतो आइ-माइ जमा हेती, नहि जानि किनकर केहन नजरि छनि ।

मुदा ओहिठाम पाबनिक अवसरक गीतनाद, विधि-व्यवहार कम होइत छल,

सिनेहक गप्प बेसी। नेहाकेँ देखैत देरी सभक जान मे जान अयलै। चट दऽ क्यो बाजि उठलीह- हे इएह तऽ नेहा आबि गेल। एकरे पुछिऔ, इएह निजगुत गप कहत। लाल बाबी नेहाक बाँहि घीचि लगमे बैसौलनि आ बाउ पीसी पुछऽ लगलथिन-अँय गय नेहा, तोहर मायक सिनेह कतऽ गेलथुन ? मुदा ओ गुम्मे रहलि। कि बिच्चे मे क्यो टीप देलकै- यै, ई छौंड़ी किछु नहि कहत। माय सिखाकऽ पठौने हेतै !

नेहाक सुकुमार हृदय काँपऽ लागल छलै। आ ओकरा किछु नहि फुरलै तँ कानऽ लागलि। ताबत नबका पीसा आबि गेलथिन आ ओकरा अपना लग बजा लेलथिन। तखन जाकऽ नेहाकेँ कतौ प्राण मे प्राण अयलै।

दिन बितैत गेलै। धीरे-धीरे लोक एकर चर्च-बर्च करैत थाकि गेल। क्रमशः बिसरि सेहो गेल। किछु दिनक बाद कतौ सँ एकटा उड़न्ती खबरि अयलै जे सिनेह काशी मे अछि। कोनो मारबारिनक दया ओकरा पर भऽ गेल छलै। ओकरा अपन बाल-बच्चा नहि छलै।

तकर बाद की भेलै से बाबा विश्वनाथे जनथिन। सिनेह कतऽ धरि अपन योजना मे सफल भेलीह, से मात्र अँटकर लगयबाक विषय रहि गेल।

नेहा सेहो पैघ भेलि। बियाह भेलै। सासुर गेलि। ओकरो जीवनक गाड़ी कतऽ सँ कतऽ चलि गेलै। बाल-बच्चा मे बाझि गेलि। एक बेर सुनबा मे अयलै जे करीब बीस वर्षक बाद सिनेह अपन गाम आयलि छलि। गाम मे सभ सँ नजदीकक संबंधी भैंसुर बाबूक आपकता सभकेँ चकित कऽ देलकै। जाहि भैंसुरकेँ नाक कटैत छलनि, अपन परिवार, अपन जाति, अपन लोकक संग संबंध स्थापित कयला पर काटिकऽ गाड़ि देबाक चेतावनी दैत छलथिन, हुनकर स्नेहसँ सभ ठीके चकित छल। बीस बर्खक बाद कहाँ-कतऽ सँ बौआ-ढहनाकऽ आयलि एक महिला पर कोनोटा रोष नहि छलनि। किछु पुछबोक आवश्यकता नहि पड़लनि आ आदरक संग अपना घर लऽ जा रखलथिन। मान-सम्मान मे किछु उठा नहि रखलथिन ।

अपन हेरायल-बिसरायल सासुर, जतऽ सभ दिन प्रताड़ना टा पाथेय रहलनि, ओहि ठाम एतेक बेस आदर-सम्मान पाबि सिनेहक आँखि डबडबा गेलनि। ओ सभ किछु बिसरि गेलीह। करीब दस दिन ओतऽ रहलीह आ अपन एकमात्र घराड़ी भैंसुर बाबूक नामे कऽ बिदा भऽ गेलीह। कतऽ सँ आयल छलीह, कतऽ बिला गेलीह, ककरो पता नहि चलल ।

सिनेह कतऽ आयल छलीह? घराड़ी बेचऽ? आ कि कमलेश केँ ताकऽ? आ कि अपन सासुर केँ अंतिम प्रणाम करऽ? नहि, भैंसुर बाबूक अनुसारे ओ हमर भावहु छलीह, अपना परिवार मे आयल छलीह।

मुदा नेहा जखन सुनलक तऽ ओकर मोन छटपटाकऽ रहि गेलै। ओकरा लगलै जेना फेर ओ नेना भऽ गेल। ओ अपन आंगन मे नाचय लागलि। नचैत-नचैत खसि पड़ल। लगलै, जेना सिनेह आबि ओकरा उठा लेलकै। धूरा झारैत कोरा मे धऽ लेलकै- ई कहैत जे कतेक बेर मना केलियौ जे साँझभरली एना नै नाची। आ दुलार सँ पीठ पर मुक्का मारैत चुम्मा लऽ लेलकै। कतेक बेर लगलै जेना सिनेह अपने आंगन सँ पूछि रहलि हो- अय यै सिनेह, नेहा खयलक, नेहा स्कूल गेल, नेहा सूतलि...

एकाएक नेहाक निन्न फुजल। ओ चारूकात चकुआ कऽ देखलक। छोटकी बेटी अनु खेलाइत छलै, बाजि उठलि- मां, अहाँ सूतल मे ककरा सँ गप करैत रही ?

नेहा लजा गेल छलीह। ओ उठि कऽ सोझे कुरूड़ करय बिदा भऽ गेलीह। आँखि पर हाथ गेलनि। नोरा गेल छलीह। नेहा कुरूड़ करैत रहलीह आ सोचैत रहलीह सिनेह कतऽ हेतीह ? मारबारिन लग? कोनो मारवारी सँ बियाह कऽ लेने हेती ?

एतबा सोचैत देरी हुनकर देह सिहरि उठलनि- बियाह !

नेहा किछु नहि सोचि पयलीह। सिनेहक मादे किछु नहि सोचि पयलीह। सिनेह स्वयं एहि लेल सक्षम छथि ।

नेहाक मोन मे एकेटा गप एखन घुरिया रहल छैक। कमलेश आइ गामक मुखिया छथि। सिनेहक देह द्वारा बहरायल ओकर अनाम संतान आइ कतऽ अछि ? एखन जँ हमरा ओ भेटितय तऽ हम कहितिऐ जे अहाँ अपन गाम जाउ आ कहियौ जे मुखिया जी हमर पिता छथि !

-मुदा अहाँक सिनेहक तँ ओ पति नहि छथिन ! नेहा कें लगलनि, क्यो कान मे ई बात कहलक ।

-हँ । तऽ ऐ मे लाज कथीक, ग्लानि कथीक! ई समाज तँ बड़ चुमकी सँ श्राद्ध आ बियाह दुनू पुजबैए ! नेहा स्वयं कें उत्तर देलनि आ आँचर लऽकऽ मुँह पोछऽ लगलीह।

ओना, आब सिनेह गामक लेल एकटा खिस्सा जकां भऽ गेलि छथि। तें चैनक क्षण मे, उदाहरणक रूप मे, लोक बजैत अछि- ऐ गाम मे एगो छली सिनेह...

*

ब्यूटीपार्लर

पार्लर बन्द करबाक बेर भऽ गेल छल। मौली आ रूबी शीशाक सोंझा जा अपन-अपन मुँह-कान ठीक करऽ लागल छल। अपन-अपन पर्श हाथ मे लऽ बिदा होयबाक उहापोह मे लागल छल। मौलीकेँ मोन पड़लैक जे ओकरा घर जयबा सँ पूर्व किछु दबाइ सेहो लेबाक छैक जकर पुर्जा ओकरे पर्श मे छैक। ओ मीना केँ देखलक जे ओहो जल्दी-जल्दी पैसाक हिसाब मे लागल छल आ अपन बटुआ बन्द कऽ बही-खाता उनटा किछु मोन पाड़बाक प्रयास मे लागल छल। फेर लगलै जेना किछु मोन नहि पड़ि रहल होइक। हारि कऽ ओ रूबी केँ पूछि बैसलि, आइ कोन तारीख छैक !

फेर जेना कतहु हेड़ा गेल। रूबी कहलकै– आइ मैडम 14 छैक । मुदा तकर कोनो असरि ओकरा पर नहि भेलैक। ओहिना चिन्ता मे डूबलि रहल। रूबीकेँ बुझा गेलै जे मीना ओकर बात नहि सुनलक, तखन किछु ऊँच स्वर मे फेर ओकरा दोहरबैत कहलक– मैडम आइ 14 दिसम्बर छैक। एतबा सुनितहि मीनाक तन्द्रा जेना टुटि गेल हो, ओ चौंकि उठल– ऐं तखन तऽ आब कम्मे दिन बाँकी छैक ! ककर कम्मे दिन बाँकी छैक! ओकरे संग रूबी आ मौली सेहो चौकि उठल । लगलै जेना ओकरा सँ कोनो अपराध भऽ गेल हो। दूनू दौड़ि गेल मीना लग। मैडम की बात छैक! कथीक कम्मे दिन बाँकी छैक ? मीना केँ लगलै जेना ओ आर झंझट मे ओझरायल जा रहल अछि, तेँ ओ झंझट सँ मुक्ति पयबाक हेतु, बात तह देबाक उपक्रम करैत कहलक– तोहूँ सब जल्दी जो ! आइ-काल्हि तऽ साते बजे लगैत छैक जे नौ बाजि गेल हो। मौली! तोँ तऽ किछु टाका मँगने छलेँ ने। ई ले 75 टाका । ई तोहर तेसर एडभान्स छौक। जखन सब एडभान्से लऽ लेबेँ तऽ दरमाहा कतेक भेटतौ ।

मौली की जवाब दितै, ओकर माय तीन मास सँ दुखित छैक. एखन धरि कोनो रोग-दुःखक पता नहि लगलैक अछि मुदा जाँचे मे हजार टाका लगभग खर्च भऽ गेलैक। पतिक आमदनी सेहो कम्मे छैक। आइ-काल्हि केहन डाक्टर भऽ गेलै आ केहन इलाज। तीन बेर तऽ खून-पेशाब जाँच आ एक्स-रे भऽ चुकल अछि। जा धरि साँस छैक कोना अनठाओत। जेठ संतान होयबाक दायित्वक निर्वाह तऽ करबे करत । भने दरमाहाक तारीख ओकरा खालीए हाथ घुमऽ पड़ै ।

आन दिन जकाँ मीना ओकरा सभक संग बिदा नहि भऽ सकल। ओकरा लगलै जेना किछु एकान्त ओकरा लेल आवश्यक छैक। मीना ओकरा सभ सँ जल्दी छुटकारा पाबऽ चाहैत छल तैं कहलकै– तों सभ जो ! हम कनेक काल एतहि बैसब। सोझाँ दोकान बलाक टेनमा सब सँ जाइत-जाइत चाह पठबा दीहें, ओकरे सब सँ पार्लर बन्द करबा लेब।

रूबी आ मौली मीना केँ उदास देखि आगाँ किछु कहबाक साहस नहि कऽ सोझे बिदा भऽ गेल। मीना भीतर सँ गेट बन्द कऽ सबटा कागज-पत्तर उनटाबऽ मे लागि गेल।

सब साल एक मास ओकरा लेल उदासी लऽ कऽ अबैत छैक, नव वर्ष सेहो कोनो नव संदेश ओकरा नहि दऽ सकलैक अछि।

नेनहि सँ उदासी आ दुःख सँ ओकरा समझौता करऽ पड़लैक। कहाँ कहियो सोचने छल जे ओकरा एना ब्यूटीपार्लर खोलि दोसरक मुँह पर रंग-टीप कऽ प्रसन्न होयबाक स्वांग रचऽ पड़तै।

सब वर्ष ई दिसम्बरक मास मोन पाड़ि अपने मुँह-हाथ नोचबाक मोन होइत छैक, ओकरा। एहन बात पर हँसी लगैत छलैक आ ओकरा ओ मूर्खता बुझैत छल जे अपने मुँह पर केओ थापड़ किएक मारत! मुदा आब ओकरा किछु आश्चर्य नहि लगैत छैक।

केहन नीक होइतै जँ ओ एकमात्र ईसाइ मित्रक निमन्त्रण पर 25 दिसम्बरक ओहि कार्यालयक टूर प्रोग्राम मे नहि बिदा होइत। मुदा ओकरा अनिच्छा सँ प्रकाशक आग्रह मानि ओहि टीम मे शामिल होमऽ पड़ल रहैक।

प्रकाशक आग्रह ओ टारि नहि सकल। बनारस पहुँचला पर ओ आ प्रकाश कार्यालयक आन सहयोगी सभसँ फराक अपन ठहरबाक ओरिआओन कयलक। विचार भेल छलैक जे दिन मे सभगोटा मानस मंदिर मे 11 बजे पूजाक बाद एकट्ठा होयब आ ओतऽ सँ सबतरि संग घूमब। ओकर कइएकटा संगीक मुँह लटकि गेल छलैक।

ओ 25 दिसम्बरक साँझ छलैक, मीना आ प्रकाश अपन ठहरबाक स्थान पर पहुँचि जल्दीसँ मुँह-हाथ धो चाह पीलक आ संध्याकालीन गंगाक सौन्दर्यक दर्शन करबाक

हेतु बिदा भऽ गेल। ओहन ठंढी मौसमक रहला पर नाव पर चढ़ि भ्रमण करयबलाक कमी नहि छल। प्रकाश सेहो अपन इच्छा व्यक्त कयलक जे किएक ने हमरा लोकनि कनेक दूर नौका-भ्रमण कऽ ली, मुदा मीना टारि गेल छल। ओकरा सीढ़ी पर बैसि ओहिना नदीक दर्शन तथा लोक सभक आयब-जायब नीक लगलै ।

एम्हर-ओम्हर कनेक काल धरि घुमलाक बाद ओ दुनू भोजन कऽ विश्रामक हेतु अपन निवास पर घूमि आयल छल। ओहि दिन मीनाक खुशीक ठेकान नहि छलैक। लगै छलैक जेना एहि बेरक क्रिसमस ओकरे लेल आयल छैक। भरि राति दुनू गोटे गप्पेमे बिता देने छल । दुनू मे सँ ककरो एको क्षणक लेल आँखि नहि लगलै। ओकरा जीवनक पहिल एहन राति छल, दुनू गोटा इएह सोचैत रहल जे ई क्रिसमस हमरा लोकनि जीवनपर्यन्त मोन राखब।

मीना कइएक बेर राति मे घर सँ बाहर भऽ आकाश मे किछु हेरायल वस्तुकेँ ताकऽ जाइत छल, लगै जेना ओकरो अपन भाग्योदयक कोनो तारा नजरि आबि जयतैक। प्रकाश कइएक बेर मना कयने छलैक— की बताहि जकाँ एतेक राति कऽ तारा गनए जाइत छी? आइ अहाँ हमरा देखू ।

जेना-तेना भोर भेल, अनिच्छा सँ गंगास्नान आ बाबाक दर्शन करबाक लेल विदा भऽ गेल। मीना कहलक जे एहि पार नहि, नाव सँ ओहि पार जा चैन सँ स्नान करब। एकटा कनिएटा छौड़ा नाव लऽ लगे मे ठाढ़ भऽ गेलै, मीना केँ कनेको डर नहि भेलैक, प्रकाश जे संग छलैक । तेँ ओही नाव पर चढ़ि विदा भऽ गेल। स्नान काल दुनू गोटा संग जल मे प्रवेश कयलक । आब दुनूक बीच कोनो दूरी नहि छलैक । तेँ ओकरा मोन मे कोनो भय नहि छलैक। गंगा जल मे प्रवेश कऽ दुनू गोटा एक-दोसराक हाथ पकड़ि संकल्प कयलक। प्रकाश बेर-बेर ओ वाक्य दोहरौलकै जे हमरा कारणे अहाँके जीवन मे कोनो दुःख नहि हएत ।

मंदिर लग पहुँचैत देरी पंडा सब तबाह कऽ राखि देलकै । अन्त मे एक ठाम अपन वस्तु-जात राखि पूजाक हेतु बिदा भऽ गेल! एकटा पंडा संग लागि गेलैक पूजा करयबाक हेतु। पूजा सँ पूर्व हाथ मे जल लऽ किछु संकल्प करयबाक मुद्रा मे ओ दुनू गोटा केँ हाथ पर हाथ रखबाक हेतु कहलकै। मीना अपन हाथ प्रकाश दिस बढ़ा देलक, मुदा ई की! प्रकाश अपन हाथ हटा लेने छल आ पंडा दुनू गोटाक मुँह देखिते रहि गेल छल ।

मीना किछु बाजि नहि सकल, जल आ फूल लऽ पूजा करबाक हेतु अश्रुपूर्ण नेत्रे बिदा भऽ गेल। बाबाकेँ ओ एतबे कहने छल जे हम हिनकर की छी, किएक हमर एहन अपमान भेल ! तकर निर्णय अहीं करब। हमरा अएबाक कनियों इच्छा नहि छल मुदा कोना अहाँ हमरा अपना दरबार एहि तरहे अपमानित करबाक हेतु बजा लेलहुँ ! नोर

पोछैत बाबाक मंदिर सँ बिदा भेल। पूजाक बाद दुनू गोटा यंत्रवत एक-दोसराक संग चलैत रहल। केओ एक दोसराकें टोकलक नहि । निवास पर पहुँचि प्रकाश मौन भंग कयलक- की भऽ गेल अहाँकें ?

मीना कें जेना सब अपमानक आबि उगलि देबाक हेतु मौन औना रहल छलैक। ओ कहऽ लागल- पंडा लग, मंदिर मे ओहि तरहें हमरा अपमानित करबाक अहाँकें साहस कोना भेल ? प्रकाश कें लगलै जेना किछु भेले नहि हो। ओ कहलक- अहाँ हमर पत्नी नहि छी, तखन हम अहाँक हाथ पर हाथ राखि कोनो संकल्प कोना कऽ सकैत छी! बात बहुत बढ़ि गेल छल। मीनाक कहब छलैक जे एतेक काल हमरा लोकनि कोना छलहुँ से बाबा नहि देखलनि । मुदा मंदिर मे हमरा हाथ पर हाथ राखि दितहु तऽ बाबा अहाँ सँ रुष्ट भऽ जइतथि !

की समाजक सोझा ककरो हाथ पकड़ी तऽ ओकर निर्वाह करब आवश्यक, जँ अपन इच्छा सँ एकान्त मे ककरो हाथ पकड़ी तऽ ओकर निर्वाह करब आवश्यक नहि ! समाजक सोझा ककरो खून करी तऽ ओ खून करब भेल, जँ चोरा कऽ एकान्त मे ककरो गर्दनि काटि दी तऽ ओकरा संयोग कहल जा सकैत छैक, की ओ निरपराध भेल? ओ खूनी नहि कहल जा सकैछ? जेना-तेना यात्रा समाप्त कऽ निश्चिन्त अवधि सँ पहिने विदा भऽ गेल छल मीना।

आठ जनवरी सेहो प्रकाशक शब्द मे स्मरणीय दिन रहत से बेर-बेर दोहराओल गेल छलैक मुदा ओ दिन स्मरण करबा योग्य नहि भऽ सकल । कारण संयोग सँ ओ प्रकाशक छुट्टीक दिन छलैक आ ओहि दिन ओकरा पत्नीक संग सिनेमा जयबाक प्रोग्राम छलैक । तैं ओहि दिन ओकरा मोन पाड़बाक आवश्यकता नहि पड़लै। सौंसे वर्ष ओ मीना कें मोन पाड़ैत रहल, मुदा जखन ओ तारीख आयल तऽ मीना अपन टेबुलक कार्य जल्दी सँ सम्पन्न कऽ प्रकाशक टेबुल पर जा पहुँचल छल। ओ सोचैत छल जे प्रकाश ओकरा अगिला दिन कार्यक्रम बनाबऽ लेल कहतै, एतेक जल्दी अपन काज सम्पन्न कऽ पहुँचि जेबा लेल ओकरा मूहें अपन बुधियारीक हेतु बाहबाही सुनत। मुदा से सब किछु नहि भेल । प्रकाश कहलक जे काल्हि तऽ हमरा छुट्टी अछि तें अहाँ कें समय नहि दऽ सकब । ओकर पैर तऽर सँ जेना धरती घसकि गेलै।

जखन एक-दोसराक निकट भेल तऽ मीना कें बूझल भऽ गेलैक जे प्रकाश विवाहित अछि, ओकर एकटा सुखी परिवार छैक। मुदा एतबा बुझबा धरि मीना सेहो अपना अधीन मे नहि रहि गेल छल। एक्के कार्यालय मे दुनू गोटा काज करैत छल। अधिक काल प्रकाश ओकरा लग आबि अनेरे गप्प करबाक प्रयास करैत छल। मीना संकोच सँ किछु बजैत नहि छल, मुदा प्रकाशक एहन व्यवहार ओकरा नीक नहि लगैत छल। एहने क्रम किछु वर्ष धरि चलैत रहल। मीना अपना कें भीतर सँ बड़ कठोर बुझैत छल। मुदा कइकटा

एहन अवसर अयलै जखन प्रकाश ओकरा नीक लगलै आ मीना ओकरा पर विश्वास कऽ अपन शुभचिन्तक बुझऽ लागल। इहो क्रम किछु वर्ष चलल मुदा प्रकाश निकटता बढ़यबाक प्रयास जारी रखलक। एक दिन अचानक गप्प करैत-करैत प्रकाश मीनाक हाथ पर अपन हाथ राखि देने छल। मीना चौंकि गेल । मुदा फेर सोचलक ई एकटा अनचोके मे भेल गलती भऽ सकैत अछि अन्यथा प्रकाश एहन नहि भऽ सकैत अछि।

मुदा मीनाक सोचब झूठ भऽ गेलै, प्रकाश सत्ये ओकरा पाछां हाथ धो कऽ पड़ि गेल छल। किछु दिन तऽ एहन भऽ गेल जे ओ राति कऽ सपना मे प्रकाशक हाथकेँ अपना दिस बढ़ैत देखय आ जाड़ोक मास मे ओकरा पसेना छुटऽ लगैत छलैक। ई क्रम बेसी दिन नहि चलल, मीना आ प्रकाश एक भऽ गेल। ओकरा लेल आब प्रकाशक कोनो व्यवहार अपरिचित नहि छलैक। कइएक बेर एहन व्यवहार पर ओकरा थापड़ मारबाक मोन होइत छलैक मुदा आब मीना ओकर स्पर्श सुखक प्रतीक्षा करऽ लागल छल।

एक दिन प्रसाद चढ़ा मीना मंदिर सँ जखन घूरल छल तऽ प्रकाशक माथ पर टीका लगा, हाथ मे प्रसाद दऽ माला ओकरा गर्दनि मे पहिरा देने छल। प्रत्युत्तर मे ओएह प्रसाद बला सिन्दूर प्रकाश मीनाक सींथ मे प्रेम सँ लगा, डबडबायल आँखिए कहने छल- इएह किएक बाँकी रहत । आ अपन ठोर ओकरा माथ पर राखि अपना बाँहि मे लऽ लेने छल। ओ दिन विवाहेक छलैक, कारण प्रकाश केँ कोनो मित्रक ओहिठाम बरियाती सेहो जयबाक छलैक।

आब मीना धन्य भऽ गेल छल जे एतेक सम्मान तऽ भेटलै ओकरा । ओ सोचि लेलक जे एहि सम्मानक लेल मीनाकेँ सेहो दायित्वक निर्वाह करऽ पड़तैक। अपन सम्पूर्ण ध्यान ओ प्रकाश दिस राखऽ लागल। संग-संग इहो जे ओकर पारिवारिक जीवन सेहो सुखी रहैक सेहो ध्यान राखऽ लागल। मुदा ई सब सोचनाइ एकटा भ्रम छलैक, मृगतृष्णा छलैक।

ई तऽ स्पष्ट छलैक जे मीना कहियो ओकरा पर आश्रित नहि होयत। ओकरा अपन पैर पर ठाढ़ रहबाक क्षमता छलैक। मीना कहियो अपना लेल एकटा घर, ओकर दरमाहा अथवा अपन कोनो आवश्यकता लेल आर्थिक सहयोग नहि माँगत।

मनुष्य कखनो इच्छारहित नहि भऽ सकैत अछि। कखनहुँ अपन स्वार्थ ओकर सोझा आबि ओकरा उचित-अनुचित सँ फराक कऽ राखि दऽ सकैत छैक। प्रकाश सेहो कखनहु अपन कोनो सुख एको क्षणक हेतु मीना लेल त्याग नहि कयलक, भने ओकर एकटा सुन्दर तथा सम्मानित नाम दऽ देल गेल दायित्व, गृहस्थाश्रमक धर्म तथा ईमानदारी। सदिखन अपन परिवार, अपन पत्नीक दोहाइ दैत रहल। काल्हि एक जनवरी छैक तेँ हमरा लोकनिकेँ पिकनिकपर जयबाक अछि, तेँ हम एको क्षणक हेतु बधाइ देबऽ नहि आबि सकैत छी, आदि। परिचयक बाद पहिल वर्ष सेहो प्रकाश एक जनवरी नहि, तीन जनवरी केँ पहुँचल छल आ मीनाक प्रतीक्षाक धैर्य ताबत शेष भऽ गेल छल। कोनो एहन

पावनि-तिहार नहि छलैक जाहि मे प्रकाश मीनाक संग दऽ सकैत। एतबे नहि, कतेक दिन एहनो भेल जे मीना ओकर प्रतीक्षा करैत रहल आ प्रकाश आबि ओकर उपेक्षा कयलक। आब मीनाक लेल कोनो शुभदिन नहि रहि गेल छल। जे प्रकाश अपन पारिवारिक असंतुष्टता देखा, अपन जीवनक रिक्तता देखा ओकरा सँ स्नेहक भीख मँगैत छल, आब ओएह व्यक्ति अपन पारिवारिक संतुष्टतता देखा मीनाक तिरस्कार करय लागल। कोनो एहन अश्लील विशेषण नहि रहि गेल छलैक जे प्रकाश मीनाक लेल प्रयोग नहि कयने हो। आब ई सब सोहाग-भाग भऽ गेल छल। आब प्रकाश कोनो तरहेँ खगल नहि छल। मीनाक संग जे कोनो ओकर व्यवहार भेलैक तकरा एकटा संयोग तथा भावना मे बहि जेबाक संज्ञा देलाक संगे इहो आरोप लगौलक जे ओहि मे मीनोक सहयोग तऽ छल । चाहे तऽ आबे की बिगड़ल ! आबो ई सम्बन्ध समाप्त कयल जा सकैत छैक।

एकटा स्त्रीक हेतु एहि सँ बेसी आओर की बिगड़ि सकैत छैक । भगवान एको क्षणक हेतु जँ ओकरा स्त्री बना दितथिन तखने ओहि दुःखक अनुमान लगा सकैत ओ।

जाहि पत्नी सँ ओकर विवाह अवश्य ओकर इच्छा सँ नहि भेल होयत से तारीख ओकरा खूब मोन छलैक, ओकर तैयारी बड़ मनोयोग सँ करैत छल, मुदा जाहि मीनाक माथ मे अपन इच्छा सँ होश-हबाश मे सिन्दूर लगौने छल, से तारीख ओकरा मोन नहि रहलैक आ ने कोनो टा तारीख ओकरा मोन पाड़ब आवश्यक बुझयलैक। पत्नीक प्रति दायित्व सदिखन मोन रहलैक मुदा मीनाक प्रति ओकर कोनो दायित्व नहि, मीनाक इच्छा किछु नहि, उनटे एहन विवाद भेला पर बहुत उत्तेजित भऽ जाइत छल आ ओकरा सुनाबऽ लगैत छल जे ओकर परिवार छैक, ओ सड़क परहक आदमी नहि अछि, आदि। एतबे नहि एक दिन ओकरा सोझा ओकर पत्नी मीनाक भरि पेट अपमान कएलक मुदा प्रकाश एक शब्द नहि बाजल, ने मीनाक घर जा बोल-भरोसक दू शब्द कहलक । उनटे पत्नीकेँ मनबैत दू दिन घर सँ नहि बहरायल।

मीना पर आब ओकरा विश्वासो नहि रहि गेल छलैक। जँ ओकरा परिवार मे ककरो सर्दीयो होइतैक तऽ ओहि लेल मीनाकेँ दोषी करारि देल जाइत छलैक। ओकर कोनो इच्छाक महत्व नहि। एकटा छोटसन इच्छा छलैक मीनाक- प्रकाश जे कोनो अपन व्यवहारक वस्तु कीनय तऽ ओ मीनाक इच्छा सँ, तकरो निर्वाह नहि भऽ सकल। आब मीना हारि गेल छल। ओकरा लग कोनो विकल्प नहि छलैक। होइ जेना एको क्षण हेतु सब बात बिसरि जाइत तऽ ओ क्षण ओकर जीवनक सुखद क्षण होइतैक। ई सोचि अपना पर ग्लानि होइत छलैक जे कोनो पुरुष, मात्र मोन लगाबऽ लेल ओकरा लग एतेक स्वांग रचलक, नहि तऽ ओकरा कोनो ककरो आवश्यकता नहि छलैक, ओ अपना मे पूर्ण छल। मीना दिन-राति अपन ठकल जेबाक सांच मे डूबल रहल। जकर सुखी परिवार रहतैक से कोनो स्त्रीक जीवन एना किएक दूरि करतैक। प्रकाश घरक आदमी घरे मे रहल मुदा मीनाकेँ सड़क परक आदमी बना चौबटियापर ठाढ़ कऽ देलक ।

आब मीना कार्यालय जायब सेहो छोड़ि देलक । लगै जेना सब ओकरे मुँह दूसैत छैक। जाहि पारिवारिक दु:स्थितिक कारणेँ अपन अधूरा पढ़ाइ छोड़ि एकटा प्राईवेट फर्म मे ज्वाइन कयने छल से नौकरी आब ओकरा काटऽ लागल छलैक। किछु दिन छुट्टी लेलक फेर लगलै जेना कोना काज चलतैक। आत्महत्या करब पाप बुझयलैक, तखन जीबाक लेल कोनो व्यस्तता चाही। अन्त मे एक मित्रक सहयोग सँ सुदूर मोहल्ला मे जा ब्यूटीपार्लर खोललक । एकटा एक्सपर्ट ब्यूटीशीयन रूबी ओकरा सहयोगक हेतु भेटि गेलै । दोसर किछु दिनक बाद मौली भेटलै। किछु दिन तऽ ओहिना माछी मारैत रहल। ग्राहक बहुत कम पहुँचैत छलैक मुदा धीरे-धीरे ओकर पार्लर मार्केट पकड़ि लेलकै। मीना अतिशय व्यस्त भऽ गेल। लगनक समय मे तऽ छुट्टियो दिन खोलि कऽ राखऽ पड़ैत छैक ।

ओना आब ओकरा कहियो शीशाक सोझा ठाढ़ होयबाक इच्छा नहि होइत छैक, कारण प्रकाश ओकर कुरुपताक वर्णन सेहो कम नहि कएलक। ओ क्रोधे मे किएक ने कएने हो, मुदा ओ सबटा वर्णन छैक। मनुष्य जे ककरो मे कमी देखैत अछि ओ सामान्य स्थिति मे मुँह सँ बाहर नहि करैत अछि मुदा वैह मनक भावना क्रोधित भेला पर अनायासे मुँह सँ बहरा जाइत छैक ।

ओना एखनो सिनुरक डिबिया लऽ जखन शीशाक सोझा मीना ठाढ़ होइत अछि तऽ कतबो शीघ्रता मे किएक ने रहओ; प्रकाशक ओ डबडबायल आँखि अवश्य ओकरा सोझा आबि जाइत छैक । मुदा फेर ई सब मात्र अपन मनक भावना बुझि मनकेँ परतारऽ लगैत अछि।

जँ आबो कोनो दिन अथवा तारीख केँ नीक बनयबाक प्रयास प्रकाश करत तऽ ओ सब आब मीना केँ निरर्थक बुझि पड़ैत छैक। ओकरा मन मे अनेरक ततेक विषाद भरि गेल छैक जे आब ओकरा लेल ओकर कोनो टा स्नेह तबधल खापड़ि मे एक बुन्द पानि जकाँ बुझि पड़ैत छैक। लगै छैक जेना स्नेहक धधकैत घुरारी मे कोनो उकाठी नेना सब आँजुरे-आँजुरे बालू धऽ कऽ ओकरा पझा देने होइक आ पुन: काठी सँ खोरि-खोरि कऽ ओही धाहक इच्छा करैत हो। मुदा आब ओहि पझाएल धाह मे ओ शक्ति कहाँ जे ओकर हाथ-पैर गरमा देतै !

एतबा होइतो मीनाक हेतु प्रकाश ओकर जीवन बनि गेल छैक। आर, किछु नहि। मुदा मीना प्रकाश केँ सदिखन प्रसन्न देखऽ चाहैत अछि। जाहि दिन ओकरा देखि लैत अछि से ओकरा हेतु नीक दिन आ जाहि दिन ओकरा नहि देखैत अछि से ओकरा हेतु अधलाह होइत छैक। ओ नहि चाहैत अछि जे फेर कोनो पुरुष ओकरा जीवन मे आबि अनेरे कोनो बोल-भरोस दैक, ओकर उदासीक कारण पुछैक अथवा ओकर शुभचिन्तक

बनि ओकरा जीवन केँ तहस-नहस कऽ दैक! आब ओ अपन कोनो इच्छा कहियो व्यक्त नहि करैत अछि ।

एखनो ब्यूटीपार्लरक गेट पर दुनू गोटा केँ कुर्सी लगा बैसल देखल जा सकैत अछि, कोनो व्यस्त मार्केट मे संग-संग कॉफी पीबैत, आइसक्रीम खाइत देखल जा सकैत अछि। मुदा ई सब मात्र औपचारिकता छैक । ओना आब मीना नितान्त एसगर अछि आ छैक ओकर इच्छाहीन जीवन। ओकरा संग छैक ओकर कर्मस्थल ब्यूटीपार्लर, रूबी ओ मौली । ओकर सहयोगी सोझाँ चाहबलाक किछु दिन पर बदलैत रंग-बिरंगक टेनमा सब।

जे कियो ओकर पार्लर मे अबैत अछि ओकरा लेल ओ एतबे कामना करैत अछि जे जाहि आगि मे ओ जरि रहल अछि, जेहन अपमान सहियो कऽ ओ जीबाक हेतु विवश अछि, तेहन जीवन जीबाक दुःख आओर ककरो नहि उठाबऽ पड़ैक ।



उदास आँगन

कतेक वर्षक बाद आइ ओही सड़क धयने मोनाक रिक्शा सरसरायल भागल जाइत छल। आब इहो रास्ता पक्की भऽ गेल छल। पहिने कच्ची छल। कहुना ठेलि-ठालिकऽ रिक्शा सड़क धरि पहुँचैत छल। रास्ता भरि धूरा फँकैत कहुना स्टेशन धरि पहुँचल जा सकैत छल। मुदा आब बाटमे कयटा चाहक दोकान भेटल जतऽ थाकल यात्री सुस्ता रहल छल।

गाम धरि पहुँचबासँ कनिके पहिने एकटा आमक गाछी अबिते लागल जेना काकी ओहि गाछक छाहरिमे दूभि पर बैसल मोनाकेँ खूब जोरसँ सोर पाड़लनि– गै मोना! आबै कने, सुस्ता ले। तखन आँगन जइहे। थाकि गेल हेबें।

मोनाक देह लागल सुन्न भऽ गेल आ ओ रिक्शा रोकि यन्त्रवत ओहि दूभि पर जा कऽ बैसि गेल। बच्चा सभ ओहि गाछीमे कुदकऽ लागल।

मोना केँ ओ शिवरातिक दिन मोन पड़ि गेल जखन सब संगी सभक संग जल ढ़ारऽ अबैत छल। घुरती काल काकी सभकेँ एही आमक गाछीमे बैसबैत छलीह। हुनक एक इशारा पर सब कनियाँ-मनियाँ सँ लऽकऽ जतेक छौड़ी आ नेना-भुटका रहैत छल, धड़धड़ा कऽ अपन-अपन ठाम धऽ ओहि सुन्दर हरियर दूभि पर बैसि महादेवक पैर जातऽ लगैत छल। काकी कोनो दोहा पढ़ैत छलीह आ सभ हुनकर अनुकरण करैत आज्ञाकारी जकाँ महादेवक थाकनि उतारैत रहैत छल आ काकीक आदेश भेला पर सभ उठि अपन-अपन घरक बाट धरैत छल।

शिवरातिक समय अबिते काकी सौंसे टोलक छौड़ी कें घर-घर जा सङोर करऽ लगैत छलीह– गे कुमरकी सभ, शिवराति दिन जल अबस्से चढ़बिहे । नीक घर-वर भेटतौ । कतेक तपस्या केला पर पार्वती कें महादेव भेटलथिन ! तोरो सभकें नीक घर-वर हेतौ । से एक इशारा पर भरि टोलक कनियाँ-मनियाँ सँ लऽकऽ नेना-भुटका तैयार भऽ जाइत छल ।

आगू-आगू उठैत-बैसैत काकी आ हुनका पाछाँ भरिटोलक धीया-पुता । काकीक एतेक धाख जे, की मजाल जे ककरो बाप-पित्ती रोकथिन ।

कोनो व्रत हो, देवउठान एकादशी, कृष्णाष्टमी आकि कोजगरा-काकी एहि सभ पावनिक राति सभकें एकठाम एकट्ठा कऽ जगरणा करबैत छलीह । राति भरि भजन-कीर्त्तन, खिस्सा-पिहानी होइत भोर भऽ जाइत छल । कनेको ककरो आँखि अलसायल कि काकी तेहन पिहानी शुरू करितथि जे क्षणेमे आँखिक निन्न बिला जाइत छल ।

पावनिये-तिहार नहि, सब समय गामक सुखे-दुख हुनकर जीवन छल ।

काकी अपन परिवारमे एसकरि नहि छलीह ! काकीक भरल-पूरल परिवार छल । अपन घरक काज भने बिगड़ि जाय, परञ्च गामक दुःख-सुख मे ओ शामिल अबस्से होइतथि । हुनका रहले नहि जाइत छल ।

एकबेर काकीक छोटकी बेटी रेणु दुखीत छल । खूब तेज ज्वर छलैक । काकी माथ पर पानिक पट्टी दऽ रहल छलीह । लगमे दस बरख बेटा आँखि फाड़ने तमाशा देखि रहल छल । एतबे मे टोलपर बाली ननटुनमी हबोढ़कारे कनैत दौड़ल आयल । ओकर तीन मासक बेटा काल्हि दुपहरिये सँ कानब शुरू केलकै से चुप हेबाक नामे ने लैत छल ।

काकी सुनैत रेणुक दुःख बिसरि, छोटुआकें ओकरा लग बैसा अपने हहायल-फुफुआयल विदा भऽ गेलीह ननटुनमीक बच्चाकें चुप कराबऽ ।

बच्चाकें लगली मालिश करऽ । नीक जकाँ बच्चाकें देह-हाथ ससारि चुप करा ननटुनमीक कोरामे धऽ ओकरा एक ढाकी बात कहलनि– हो, आब एकरा छाती धरा दही ! अपन दूध पिआऽ ! शीशी बोतल छोड़ । मायक दूध सँ बढ़िकऽ किछु नहि होइत छैक । शहरक फैशन तोरो सभ पर सबार भऽ गेल छौक । अपन दूध नहि पिआकऽ, की मेम बनबें !

मझिला भैयाक दुरागमन मे मोना गाम गेल छल । मोनाक बड़का बेटा मुन्ना तखन सबा मासक छल । दिन-राति छौड़ा कनिते रहैत छल । सूतऽ के नाम नहि ।

दिन तऽ कहुना बिती जाइत छल, मुदा राति । बीतब कठिन भऽ जाइत छल ।

चौबिसो घंटा कननी लागले रहैत छलैक । सभ दिनक इएह तमाशा । आँगनक कोन कथा भरि टोलक लोक अकच्छ । पाहुन-परक पर्यन्त ओकर कननी सूनि आजिज छलाह । मोनाक माय तऽ छौड़ाक कोरमे लऽ कानऽ लगैत छल आ मोना लेखे धन सन । मुदा काकी, मोना जा धरि ओहि ठाम रहल, बीच रातिमे बहुरन ओझाकेँ बजाबथि आ माथा हाथ दिआबथि ।

बहुरन नहि जानि कतेक काल धरि छौड़ाक माथ पर हाथ रखने बुदबुदाइत रहैत छल, तखन जाकऽ छौड़ाकेँ कने कालक लेल चैन भेटैत छल ।

बड़की भौजी कहथि– धुर जो ! अइ छौड़ाक सब दिन इएह तमाशा । एकर बाबा सेहो एहने नटकिया छैक ।

मोना दाइ– चलू, मारिपीटि कऽ छौड़ाकेँ सुताउ तऽ ! काकी केँ तऽ अपनो नीन नहि होइत रहैत छन्हि, तऽ की करती ! हुनका लेल तऽ नीके, राति भरिक धंधा । काकी सुनिते देरी भौजीक बाप-दादाकेँ गारि पढ़ब शुरू कऽ दितथि ।

बड़की भौजी काकीक डरेँ झट दऽ केबाड़ बन्न कऽ घरमे नुका रहैत छलीह । फेर काकी मुन्नाकेँ कोरमे लऽ कतेक रंगक कौआ-मैनाक गीत गाबि सुताबऽ मे मगन भऽ जाइत छलीह । कबुला-पातीक तऽ कोनो ठेकाने ने ! नहि जानि कतेक ठाम लट कटाबऽ लेल कबुलने जाथि । मोना कहय– काकी ! बस करू । एतेक कबुला उतारतै के !

एतबा सुनिते काकी, मोनाक सासु-ससुर केँ गारि पढ़ब शुरू भऽ जाइथ ।

नबकी भौजीक संग हुनका गामसँ खबासिन आयल छल । बुढ़िया कुबड़ी छलैक । भरि आँगनक धीया-पुता ओकरामे लपटायल रहैत छल । बुढ़िया बेस मखौलिया छलैक ।

काकी कहथि– गै मोना ! सुन ने, खबासनी पीठपर कुब्बड़ नहि छनि, ओ तऽ अपना ले पाथेय अनने छथि । एतबा सुनिते सब धीया-पुता खबासिनीमे लटकि जाइत छल– ऐ खबासिनी, देखू तऽ की सब अनने छी ?

ओकरो कोना दस दिन बीति गेल से पतो नहि चलल । फेर मोना शहर चलि आयल ।

ओहि साल आम बड़ मजरल छल । अचानक काकी दुःखीत पडलीह । जा धरि दुःखक पता लागय, ता धरि बहुत देरी भऽ गेल छल । काकी ककरो सँ किछु कहबो नहि कयलनि बजिते-भुकिते आँखि मुनि लेलनि ।

तीन दिन पहिने अन्न-पानि छोड़ि देने छलीह । ठीक एकादशीक प्रात द्वादशीक पारणक समय मात्र दू घोंट गंगाजल पीबि प्राण त्यागलनि । सौंसे गामक बूढ़-बच्चा, कनियाँ-मनियाँ पर्यन्त काकीक अन्तिम संस्कार मे संग गेल ।

सभक ठोर पर एकेटा बात छल । शुद्धक समय काकीकेँ नहि जयबाक चाही । भरि

टोलमे मूड़न, उपनयन, विवाह छैक । सभा सेहो लगचिया गेल छैक । बेटीक विवाहक लेल हाथी, ठक-बक के बना कऽ राखत । ककरो बेटीक विवाह किएक ने होइक, काकी एसगरे अपन आँगन हाथी बनबैत, ओकरा रँगैत-ढौड़ैत गीत गबैत रहितथि, से आब के करत ! कनियाकेँ महफा सँ के उतारत । कनियाँकेँ पहिने गुड़ के खुआओत । विधि-व्यवहार के कराओत । गीत के गाओत । एहू वयसमे काकीक कंठमे जे टाँसी छलनि, ओहिमे केओ संग नहि दऽ पबैत छल । जा धरि काकी नहि गीत उठबितथि ता धरि कोनो जमाय के टोलमे महुअक नहि शुरू होइत ।

कोनो छौड़ी उठबितो छल तऽ सिनेमाक भासपर । से काकीकेँ नहि सोहाइत छलनि । काकी कहितथि– गै छौड़ी सभ, तोरा सभकेँ अपन भास नहि नीक लगैत छौक जे सिनेमा भासक गीत गबैत छें । कोना तोरा सभकेँ सिनेमाक हवा लागि गेलौक से नहि जानि । आगि लागय मुँहझौंसा सिनेमाबला सभकेँ, एहि गामकेँ तऽ दूरि कऽकेँ राखि देलक । हरियाक जुआन बेटाकेँ सिनेमा बला कहाँदन फुसला कऽ बजारपर सँ लऽ गेलैक । छौड़ा गेल छलैक बजारसँ अपन दोकान लेल सौदा लाबऽ लेल आ ओतहि भूत जकाँ ओकरा पाछाँ लागि गेलैक । सभ पूँजी-पगहा लऽ छौड़ा ओकरे पाछाँ कहाँदन बम्बइ भागि गेलै ।

हरिया दलानपर आ आँगन मे ओकर घरवाली दू मास धरि खाट धेने रहल । हरियाक बेटी शन्तिया कतेक कबुला-पाती कयने होयत । मायकेँ तऽ कतेक दिन पानि नहि घोंटल होइत छलैक । बरख दिन पर छौड़ा बौआ-ढहना कऽ गाम आपस आयल एहि फगुआ मे हरियाक घरमे भगवानक पूजा छल । भरि गामक लोक छौड़ाक मुँह देखऽ आयल छल । लगे छल जेना हरियाक दुआरि पर बरियात उतरल हो । काकी छौड़ाक मुँह-कान निहारैत हरियाकेँ कहलनि– एकर जल्दी बियाह करा । एकर पैर मे बेड़ी दे, दुइये दिनमे छौड़ा सोझ भऽ जेतौ । भागमन्त छलेँ जे छौड़ा एसगरे एलौ । जँ कोनो मेम के उठौने अबितौ तऽ कतऽ भऽ कऽ रहितेँ ।

से, अहिना भरि गामक समस्या मे जुटल रहैत छली काकी । काकी मरबाक समाचार सुनि काका भोकारि पाड़ि कऽ कानऽ लगलाह । काकाकेँ आइ धरि केओ कनैत नहि देखने छलनि । सौंसे जिनगी काका काकीकेँ कोनो महत्व नहि देलनि, मुदा आइ हुनक अभाव असह्य भऽ रहल छलनि । काकाकेँ चुप करयबाक ककरो सामर्थ्य नहि छल । सभ एक-दोसरक मुँह देखऽ लागल । बच्चा सभ अपन कानब छोड़ि काकाक मुँह देखऽ लागल ।

मरऽ सँ पहिने काकी घुरि-फिरि काकाक चर्च कऽ सभसँ पुछथि । लगैत छल जेना काकी काकाक बाट तकैत होइथ । मुदा काका नहि अएलाह ।

काकी सब बाल-बच्चाकेँ मोन पाड़ैत रहलीह । बेर-बेर दोहरबैत रहलीह फकड़ा- सात बेटा राम के, एक्को ने काम के ।

काकी कएक बेर पुछलनि- मोना तोहर काका नहि एलथुन ? ककरो लग तकर जबाब नहि छलैक । ककरो नहि विश्वास छलैक जे काकी एतेक जल्दी बिदा भऽ जयतीह ।

हुनक अन्तिम संस्कार मे सौंसे टोलक छौड़ा सभ हुनक चिता पर टिकुला-मज्जर सँ लदबद ठारि सभ काटिकऽ धऽ देलक । मज्जर-टिकुला सहित ठारि धरैत जाइत छल आ कहैत जाइत छल- बाबी अइ बेर नहि छै तऽ टोलमे ककरो अँचार-आमिल नहि बनबऽ देबै । किए कियो अमोट बनाओत । जो बाबी, स्वर्ग मे बैसि कऽ खूब चटनी बनबिहेँ आ धिया-पुता सभ के आशीर्बाद दिअही ।

अचानक लगलै जेना मोनाकेँ ओहि हरियर घास पर बैसल-बैसल काकीक हाथक चटनी-अँचारक सुगन्धि लागऽ लगलै । मोना चारू भर चकुआय लागल । ताबत रिक्शाबला मजिद मियाँ बुढ़बा खौंझाइत बाजल- चलऽ ने बुच्ची, बाटेमे साँझ कऽ देबहक ! साँझमे कनियाँ अबैत छैक, बेटी तऽ दिने-देखार अबैत छै, सएह नीको लगैत छैक । बाबा कखनी सँ बाट तकैत हेथिन । देरी होतै तऽ हमरे बात कहता । कए दिनसँ सब के कहने घुरै छथि जे आइ तोहर अबाइ छैक ।

मोना फेर सोचऽ लागल- सब होयत, मुदा काकी नहि होयतीह । आँगन मे धड़फड़ाइत पटिया के ओछाओत ? खोंइछ के झारत ?

जानि नहि भौजी सबकेँ मोनो हेतनि की नहि जे बेटी अएलापर बड़ी आ बासि भात पहिने खुआओल जाइत छैक ! मोना इएह सब सोचैत रिक्शा पर चढ़ि बिदा भऽ गेल।

**



प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'

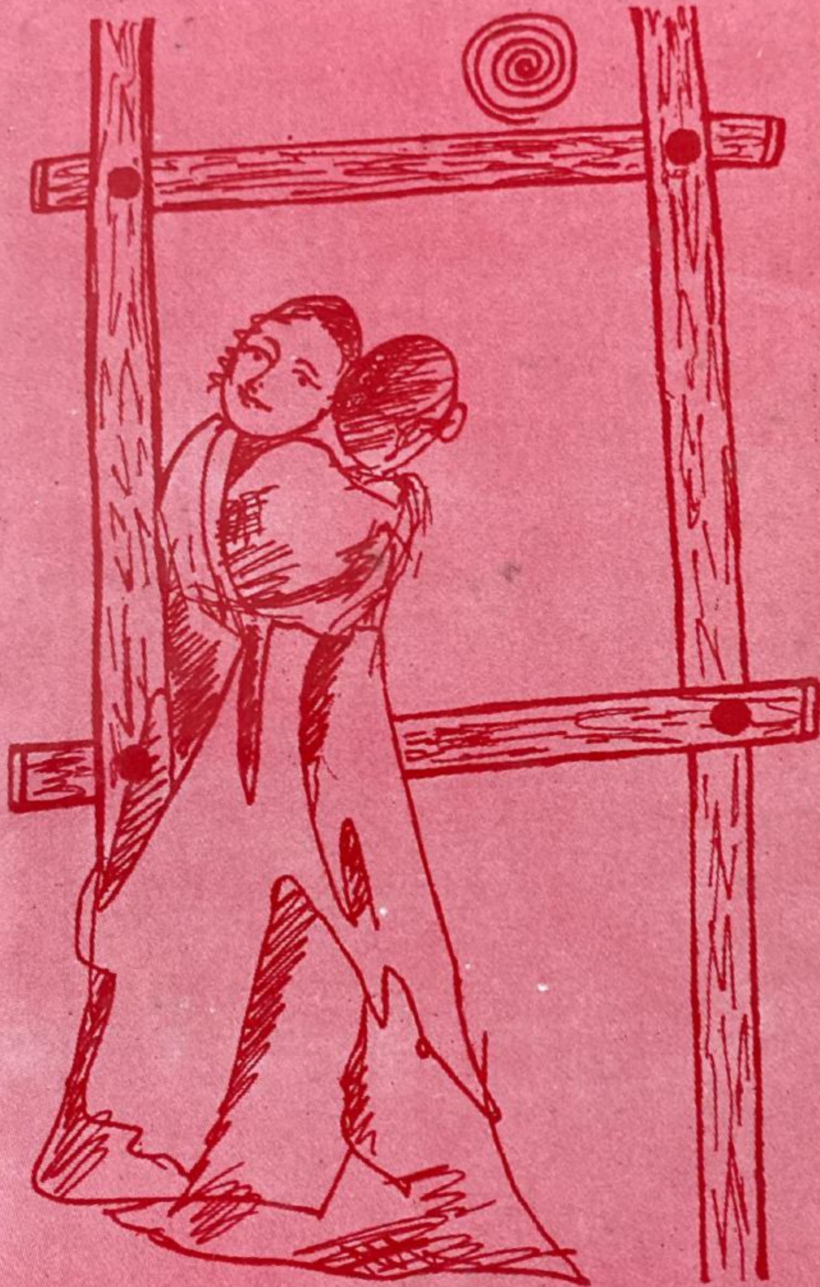
जन्म : रहिका, मधुबनी (बिहार)
तिथि : 29 सितम्बर 1948
शिक्षा : एम.ए. (मैथिली), एम.एड्
व्यवसाय : + 2 व्याख्याता, बाँकीपुर राजकीय बालिका द्वादशीय विद्यालय, गोलघर, पटना-800001

अभिरुचि : अभिनय । एखन धरि लगभग दू सए नाटक तथा अनेक मैथिली, हिन्दी, भोजपुरी फीचर फिल्म, टेलीफिल्म आ धारावाहिक मे अभिनय । एकर अतिरिक्त आकाशवाणी, पटनासँ कथा-वार्त्ताक वाचनक संगहि रेडियो नाटकमे सहभागिता तथा उद्घोषणा-कम्पीयरिंग ।

पद : चेतना समिति, भंगिमा, अरिपन, मैथिली महिला संघ, बिहार संगीत नाटक अकादमी, वंदना रानी केन्द्र आदि संस्थाक अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, सचिव, कोषाध्यक्ष रूपमे समय-समय पर कार्यरत ।

सम्मान : चेतना समिति, पटना / अरिपन, पटना/ मिथिला विकास परिषद्, कलकत्ता / अखिल भारतीय मिथिला संघ, नई दिल्ली / बिहार आर्ट थियेटर, पटना / प्रांगण, पटना / विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगा / मिथिला सांस्कृतिक संगम, प्रयाग/ भारतीय राष्ट्रीय छात्र संगठन, पटना, बिहार / पटना रोटरी क्लब आदि द्वारा अभिनंदित ओ सम्मानित।

सम्पर्क : एल 2/33, पी.आइ.टी. कालोनी, कंकड़बाग, पटना- 800020,
दूरभाष : 0612-2351976



प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'

एगो छली सिनेह